अरुणोदय

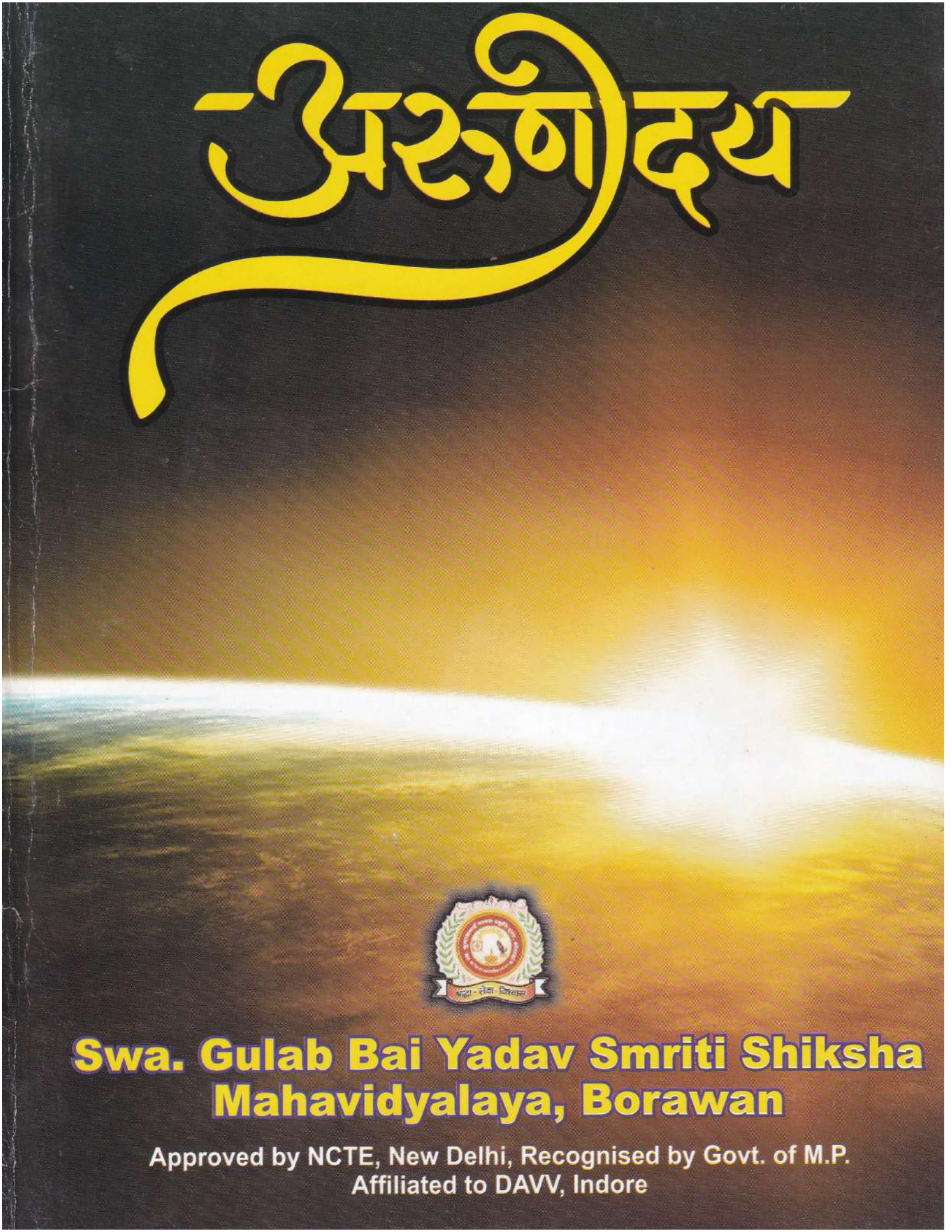

Swa. Gulab Bai Yadav Smriti Shiksha Mahavidyalaya, Borawan

Approved by NCTE, New Delhi, Recognised by Govt. of M.P.
Affiliated to DAVV, Indore

Message

Dear Students,

Life is a test. Once John Greenleaf Whittier remarked.

'Peace hath higher tests of manhood than battle even knew.'

No wonder great leaders like Abraham Lincoln and Nelson Mandela believed in ending enemiites by converting enemies into friends. This may appear to be a difficult task, but it is not an impossible one. The foundation of peace lies in empathy, kindness and understanding. A teacher's prime duty is to inculcate values in students that lead to peace and harmony in society and also build a strong nation. May you become angels of peace !

As this session draws to a class, I extend my best wishes to you and also hope to see you successful in your efforts. Those who come back after the semester break will surely feel rejuvenated after the break. I expect that you will continue to activiely participate in all the programmes and reveal your potential in all walks of life.

Your creativity is amply reflected in Arunodhya , your magazine, and I wish to see is blossom. May you achieve your targets be messengers of peace, development, goodness, and above all be teachers who inspire !

Principal
Dr. S. K. Tiwari

संदेश

शिक्षा जीवन की तैयारी, शिक्षा जीवन का प्रकाश है।
शिक्षा है निर्माण चरित्र का, शिक्षा क्षमता का विकास है।।

शिक्षा को जीवन की प्रयोगशाला कहा गया है। शिक्षा ही वह सशक्त उपागम है जिसके द्वारा व्यक्ति विभिन्न संस्कारों के माध्यम से अपने शरीर, मन और आत्मा का समन्वित विकास कर समाज एवं राष्ट्र का योग्य नागरिक बनता है। नागरिकों को अपनी संभावनाओं की सर्वोच्चता पर प्रतिष्ठित करना गुणात्मक शिक्षा का कार्य है।

शिक्षक शब्द का पहला वर्ण 'शि' है जो सतत शिवमय है, कल्याणमय है, शुभसंकल्पमय है। शिक्षक शब्द का दूसरा वर्ण 'क्ष' है जो क्षमता और क्षमा दोनों का प्रतीक है। शिक्षक शब्द का तीसरा वर्ण 'क' है जो कर्म और कर्तव्य का प्रतीक है। शिक्षक शब्द में निहित अर्थों का सार्थक करना ही सही अर्थ में शिक्षक होना है।

स्मारिका 2014-15 के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं एवं शुभाशीष।

अरुण यादव
चेअरमैन

Dear students,

Warm greetings

First of all, I heartily congratulates to all the members of editorial board and students who have contributed to the successful publishing of this magazine, SAMAY.

It is the matter of joy and pleasure, to inform you that from this year we have started a special editorial column for alumni. So, even after you finish your respected course, you can portray your talent on the institute canvas.
In addition to the numerous achievements of the institute this is yet another mile stone in their curricular and co-curricular activities.

I hope the magazine will bring creative talents of the students of the institutes.

The college magazine is a forum which could aptly be used for recording events, fond memories and creative writing. I am sure that this magazine will be informative and resourceful On this occasion, I convey my best wishes to the principal, students, faculty staff and every student of the college in their endeavors.

Regards
Sachin Yadav
Trustee

झलकियाँ

INTERNATIONAL CONFERENCE
on
Changing Perspectives & Challenges of Teacher Educati
25-27-28 Sept. 2015

प्राचार्य की कलम से

हमारे महाविद्यालय की पत्रिका `अरुणोदय' के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। समय सदा गतिशील होता है, वह किसी भी स्थिति में रुकता नहीं है। इसी प्रकार स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय बोरावां (खरगोन) अपनी प्रगतिशील विचारधारा के साथ उत्तम शिक्षक प्रशिक्षण कार्य हेतु तत्पर है।

यह `अरुणोदय' आपकी कोमल भावनाओं का दर्पण है। इसके माध्यम से मैं अपने विचार आप तक पहुंचाना चाहता हूं। मेरी सदा यही आकांक्षा रही है कि मेरे विद्यार्थी अध्ययन में लगनशील, आचरणवान, उच्च विचार तथा नैतिकता की अच्छाइयों को ग्रहण कर ऊंचे पदों पर आसीन हों और राष्ट्र के उत्थान में अपना पूर्ण योगदान दें। साथ ही अच्छे नागरिक का कर्तव्य पूर्ण निष्ठा से करें।

साहित्य समाज का दर्पण होता है और उसके आदर्शों का आकाशदीप। साहित्य सूक्ष्मदर्शी और दूरदर्शी ही नहीं होता बल्कि वह त्रिकालदर्शी भी होता है। प्रत्येक समाज का भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यकाल साहित्य में व्याख्यायित होता है। उसमें समाज के कृष्ण और शुक्ल दोनों पक्ष प्रतिबिम्बित होते हैं। जहां एक ओर साहित्यकार पाठकों की सामाजिक यथार्थ से साक्षात्कार कराता है वहीं दूसरी ओर उन ध्रुव आदर्श और यक्ष प्रश्नों की ओर भी पाठकों के ध्यान का प्रयास करता है। अरुणोदय वार्षिक पत्रिका 2014-15 में भी हमारे रचनाकारों ने उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जो मेहनत की है और पत्रिका को गौरवान्वित किया है उनको पुनः मेरी ओर से

हार्दिक शुभकामनाएं।

-प्राचार्य

डॉ. सुरेंद्र कुमार तिवारी

शैक्षणिक स्टॉफ

छात्र सम्पादक मण्डल

प्रवीण कुमार
(एम.एड.)

विपुल गावशिंदे
(एम.एड.)

रानु जायसवाल
(बी.एड.)

झलकियाँ

झलकियाँ

DONATE
BLOOD
SAVE LIFE
गुलाबबाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, बोरावां

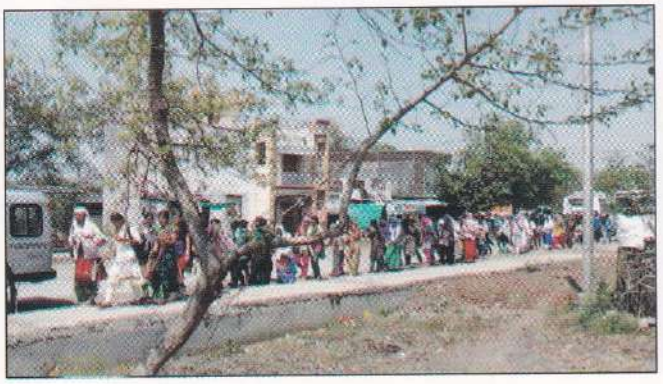

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
गुलाबबाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, बोरावां

झलकियाँ

झलकियाँ

विश्व पर्यावरण दिवस
स्वच्छ भारत उज्जवल भारत ।
गुलाबबाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, बोड़ला

College Topper

बी.एड. परिणाम

प्रथम

University Topper

सोनिया तोमर

67.5% प्रथम

द्वितीय

कीर्ति गुप्ता

66.9%

तृतीय

नेहा दशोरे

64.4%

एम.एड. परिणाम

शिवशंकर कुमार सिंह

66% प्रथम

द्वितीय

धीरज सिंह

66%

तृतीय

ज्योत्सना गुप्ता

54%

श्रद्धा - सेवा - विश्वास

संपादकीय

शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य है मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना। हमारा संस्थान इसके लिए निरंतर प्रयत्नशील रहा है। अरुणोदय का प्रकाशन इसी दिशा में एक मजबूत प्रयास है। अरुणोदय एक ऐसा मंच है जो न केवल उभरते रचनाकारों को अवसर उपलब्ध करवाएगी बल्कि उनके भीतर छुपी मौलिकता को सृजनात्मकता की ओर प्रेरित भी करती है। पश्चिमी भारती की पांच अति महत्वपूर्ण भाषाओं के उभरते लेखकों को एक सीमित कलेवर में पिरोना अपने किस्म का अनूठा प्रयास है। यही अरुणोदय की शक्ति भी है।

सृजन अपने आप में ही मौलिक होता है फिर चाहे वह जीवन के आंतरिक पक्ष से संबंधित हो या बाह्य अनुकृति से। इस मौलिकता को आप पत्रिका की गहन रचनात्मकता और सुंदर डिजाइन में देख सकते हैं। इस बार पत्रिका के बाहरी कलेवर में अद्योपांत परिवर्तन किया गया है वहीं पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं एक ओर जहां परंपरा के साथ गहन जुड़ाव को इंगित करती हैं वहीं दूसरी ओर उनमें नएपन के स्वागत का उल्लास भी है। कहना न होगा कि यह अकादमिक सर्जनात्मकता का जीवंत दस्तावेज है।

पूर्णता जीवन में ठहराव को जन्म देती है वहीं कमियां मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है। संभव है इस प्रयास में कुछ कमियां रह गई हों। अरुणोदय को और अधिक रचनात्मक, स्तरीय और उपयोगी बनाने हेतु आप सभी सुधी पाठकों के विचारों का स्वागत है।

शुभकामनाओं सहित।

संपादक

अनुक्रमणिका

भारती वंदना	06
सफलता का मूल्यांकन	07
मैथ्स से न रखें 36 का आंकड़ा	09
कुछ अलग हटकर सोचें	10
माता-पिता	11
ज्ञान प्रसार का साधन पुस्तकालय	12
समाज के वास्तविक शिल्पकार शिक्षक	13
देश प्रेम	14
भ्रूण हत्या	15
जाने कैसा नाता	16
कैसा शासन बिना अनुशासन	17
परीक्षा रात	19
वीर	20
अच्छा व्यवहार परमात्मा की देन	21
भारतीय नारी की कहानी	22
जीवन में तीन चीजों का महत्व	23
शिक्षण प्रभावशीलता	24
सबको साथ लेकर चलें	26
शिक्षक की जिम्मेदारी ही उसकी गरिमा	27
बच्चों को मिले शिक्षा की ताकत	29
व्यक्तित्व का आभूषण है विनम्रता	30
मानसीक समस्याओं से जूझता समाज	31
लालच नहीं करना चाहिए	33
शिक्षा का महत्व	34
अब आएगा वायफाय का मजा	35
शिक्षा, समाज व नैतिकता	36
युवा शक्ति	38
उपासना साधना	39
शिक्षा बिना जीवन अधूरा	40
ऐसा गाँव बनाएँ	41

अनुक्रमणिका

माँ	42
रुकना नहीं	43
नारी की मौलिकता बनी रहनी चाहिए	44
दोस्त	46
बेटी बचाओ	47
भ्रूण हत्या	48
बेटियाँ	49
गरीब कौन	50
Why Not a Girl	51
Discipline	52
All Izz Well	53
A Fairy Come	54
Self Awareness	55
A Glimpses of Divine	56
Ego or Arrogance	57
Inspiration from Nature	58
Peace not Pieces	59
What a Life	60
God's Gift My Teachers	61
Secrets of Success	62
Take the Initiative	63
Success v/s Failure	64
How the Months Got their Names	65
Education of Girls	66
My Mother	67
Child Labour	68
My Friends	69
What Determines the Success	70
Winner	71
Time is Money	72

भारती वंदना

-हरिराम आचार्य

जय जय हे भगवति सुर भारति
तव चरणौ प्रणमामः।
नादब्रह्ममयि जय वागीश्वरि
शरणं ते गच्छामः।
त्वमसि शरण्या त्रिभुवनधन्या
सुरमुनिवंदितचरणा।
नवरसमधुरा कवितामुखरा
स्मितरुचिचिराभरणा।।1।।
आसीना भव मानसहंसे
कुंदतुहिनशशिधवले
हर जडतां, कुरु बोधिविकासं
सितपंकज तनुविमले।।2।।
ललितकलामयि ज्ञानविभामयि
वीणापुस्तकधारिणी
मतिरास्तां नो तव पदकमले
अयि! कुण्ठाविषहारिणी।।3।।

भावार्थ

हे भगवती देववाणी! तुम्हारी जय हो। हम तुम्हारे चरणों में प्रणाम करते हैं। हे नादब्रह्ममयी वाणी देवी! हम तुम्हारी शरण में आते हैं। तुम भारण के योग्य हो। तुम तीनों भुवनों में धन्य हो। देव और मुनिगण तुम्हारे चरणों की वंदना करते हैं। नौ काव्यरसों से मधुर, कविता द्वारा बोलने वाली तुम मंदहास की आभारूपी सुंदर आभूषणों से युक्त हो। हे श्वेत कमल के समान स्वच्छ शरीरवाली, कुंदपुष्प, बर्फ और चंद्र के समान धवल शरीर वाली! तुम मेरे हृदयरूपी हंस पर विराजित हो। मेरा अज्ञान दूर करो और मेरे ज्ञान का विकास करो। हे ललितकलामयि! ज्ञानप्रकाश से जगमगाती एवं वीणा पुस्तकधारिणी देवी! तुम्हारे चरणकमलों में हमारी बुद्धि लगी रहे क्योंकि तुम कुंठारूपी विष को हरने वाली हो। तुम्हारी जय हो।

डॉ. सुरेंद्र कुमार तिवारी
प्राचार्य

सफलता ही मूल्यांकन

बाजार में वस्तुओं का मूल्यांकन दूसरे लोग निर्धारित करते हैं मगर मनुष्य के संबंध में यह उलटा है। मनुष्य अपना मूल्यांकन स्वयं करता है और जितना वह मूल्यांकन करता है उससे अधिक सफलता उसे कदापि नहीं मिलती। एक सामान्य परिवार से उठकर बैंजामिल डिजराइली जब इंग्लैंड के संसद-सदस्य बने तो अन्य साथियों ने उनकी बड़ी उपेक्षा की। यहां तक कि वे जब बोलने के लिए उठते तो उन्हें बोलने भी नहीं दिया जाता था।

पर इन परिस्थितियों में भी डिजरायली ने अपने लक्ष्य को नहीं छोड़ा। उसके प्रति अपनी दृढ़ निष्ठा को व्यक्त करते हुए उन सदस्यों से कहते जो उनके भाषण में व्यवधान डाला करते थे- 'आपको एक दिन मेरी बातें अवश्य सुनना पड़ेंगी।' यह डिजरायली नहीं बल्कि उनका आत्मविश्वास बोल रहा था। उन्हें अपनी आंतरिक शक्तियों पर विश्वास था कि वे अपना उचित मूल्यांकन करना जानते थे और इसी का परिणाम है कि प्रयत्न और पुरुषार्थ के बल पर एक दिन वे इंग्लैंड के प्रधानमंत्री पद तक जा पहुंचे और जो लोग उनका उपहास किया करते थे, वे ही उनके प्रशंसक और गुणगान करने वाले बन गए।

प्रत्येक व्यक्ति को यह मानकर चलना चाहिए कि परमात्मा ने उसे मनुष्य के रूप में बनाया है और इस रूप में बनाते समय उसने मनुष्य की चेतना में सभी संभावनाओं के बीज डाल दिए हैं तथा उनके अंकुरित होने की क्षमताएं भी डाल दीं। पर प्राय: देखने में आया है कि हममें से अधिकांश व्यक्ति अपनी उन सुषुप्त क्षमताओं और संभावना के बीजों को विकसित तथा अंकुरित करने की चेष्टा तो दूर रही उनके संबंध में विचार तक करना नहीं चाहते। कई बार ऐसी परिस्थितियां आती हैं जिन्हें अनपेक्षित कहा जा सकता है और उनका उपयोग करने में हम संकोच करने लगते हैं। एक घटना नेपोलियन के एक सैनिक से संबंधित है। कहा जाता है कि उस सैनिक को नेपोलियन के पास कोई महत्वपूर्ण संदेश लेकर भेजा गया था। संदेश इतना महत्वपूर्ण था कि जितनी जल्दी हो सके पहुंचाने की बात भी उसके साथ जुड़ी हुई थी। सौंपे गए दायित्व को तत्परता से पूरा करने के लिए उस सैनिक ने अपना घोड़ा बड़ी तेजी से दौड़ाया कि गंतव्य स्थल तक पहुंचते ही उसके घोड़े ने दम तोड़ दिया। नेपोलियन ने उसकी कर्तव्यनिष्ठा को सराहा तथा पत्र का उत्तर लेकर उसी शीघ्रता से ले जाने

को कहा जबकि नेपोलियन को मालूम था कि सैनिक का घोड़ा मर चुका है। अतः वह बोला- यह लो मेरा घोड़ा और जल्दी से यह उत्तर ले जाओ। सैनिक भौंचक्का होकर अपने सेनापति की ओर देखने लगा। लेकिन श्रीमान..... सिपाही अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि नेपालियन ने बीच में ही टोकते हुए उसे कहा- मैं जानता हूं कि तुम क्या कहना चाहते हो मगर यह याद रखो दुनिया का ऐसा कोई घोड़ा नहीं जिसकी तुम सवारी न कर सको। वस्तुतः हमें उतनी ही सफलताएं या उपलब्धियां मिलती हैं जितनी कि हम चाहते हैं। चाहने को तो लोग न जाने क्या-क्या चाहते हैं, आकांक्षाएं और इच्छाएं रखते हैं। मगर ऐसा चाहना अलग बात है और उसका वैसा ही फलित हो जाना अलग बात है। हम चाहते तो हैं कि हमारे पास खूब संपत्ति हो परंतु सौ में से दस प्रतिशत के मन में भी संपत्तिवान बनने की आकांक्षा नहीं होती क्योंकि उन्हें विश्वास ही नहीं होता कि वे संपत्तिशाली भी बन सकते हैं।

इस संसार में मनुष्य के लिए न तो कोई वस्तु या उपलब्धि अलभ्य है तथा न ही कोई व्यक्ति किसी प्रकार अयोग्य। अयोग्यता है तो वह इतनी भर कि वह स्वयं अपने को उस उपलब्धि के योग्य अनुभव नहीं करता। यदि अपनी क्षमताओं को पहचानकर उनका विकास किया जाए तथा आत्मीयता की संजीवनी द्वारा उन्हें जीवंत बनाया जाए तो मनुष्य परमात्मा का राजकुमार कहलाने की स्थिति प्राप्त कर सकता है।

एक बार गांधीजी इलाहाबाद में आनंदभवन में ठहरे। सुबह गांधीजी हाथ-मुंह धो रहे थे और जवाहरलालजी पास खड़े बातें कर रहे थे। कुल्ला करने के लिए गांधीजी ने जितना पानी लिया वह समाप्त हो गया तो उन्हें दूसरी बार फिर लेना पड़ा। गांधीजी बड़े खिन्न हुए और बातचीत का सिलसिला टूट गया। जवाहरलालजी ने कारण पूछा तो उन्होंने कहा- मैंने पहला पानी ज्यादा खरच कर दिया और अब मुझे फिर पानी लेना पड़ रहा है। यह मेरी बड़ी भूल और लापरवाही है। इस पर जवाहरलालजी हंसते हुए बोले- यहां तो गंगा-यमुना दोनों बहती हैं। रेगिस्तान की तरह पानी कम थोड़ ही है। आप थोड़ा पानी अधिक भी खरच कर लें तो चिंता की क्या बात है ? गांधीजी ने कहा- गंगा-यमुना मेरे लिए ही तो नहीं बहतीं। प्रकृति में कोई भी चीज कितनी ही हो, मनुष्य को उसमें से उतना ही खरच करना चाहिए जितना उसके लिए आवश्यक हो।

महात्मा गांधीजी का यह चिंतन आज भी हमें बहुत बड़ी शिक्षा देता है। प्रकृति की वस्तुओं को बेकार में बर्बाद करके हम अपना बुरा ही कर रहे हैं।

संतोष गिरी
एम.एड.

मैथ्स से न रखें 36 का आंकड़ा

बचपन से लेकर बड़ी क्लासेस तक एक कॉमन चीज है जो अक्सर लोगों को डराती है। यह कोई भूत या हौव्वा नहीं बल्कि एक मजेदार सा सब्जेक्ट है मैथेमेटिक्स। कुछ लोग वाकई मैथ्स में कमजोर होते हैं तो कुछ इसकी कठिनता के बारे में सोच-सोचकर ही अपना विश्वास खो देते हैं। अगर आप इसमें अभी तक कमजोर भी रहे हों तो भी अभ्यास के बल पर आप इसमें आसानी से दक्षता हासिल कर सकते हैं।

बेसिक कॉन्सेप्ट्स पर जोर

मैथ्स पर कमांड बनाने के लिए जरूरी है कि बेसिक कॉन्सेप्ट्स पर आपकी पकड़ मजबूत हो। इन कॉन्सेप्ट्स को मजबूत करने के लिए चौथी-पांचवीं की किताबों से मैथ्स की शुरुआत करें। इस तरह आगे बढ़ते हुए 10वीं-12वीं की किताबों तक आएं। सीधे-सीधे बड़ी क्लास के कोर्स से शुरुआत करेंगे तो कठिनाई आएगी।

सीखें कुछ ट्रिक्स

मैथ्स की बड़ी-बड़ी कैलकुलेशंस को कुछ पलों में भी आसानी से हल किया जा सकता है। इसके लिए कई तरह की ट्रिक्स होती है। ये ट्रिक्स आपको प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करवाने वाले टीचर भी बता सकते हैं और नेट पर खुद भी खोज सकते हैं।

मिलेंगे अवसर

मैथ्स पर कमांड रखने वाले को प्रोफेशनल फील्ड में कहीं अधिक विकल्प मिल सकते हैं। आप अकाउंट्स, टीचिंग, बैंकिंग, स्टैटेस्टिकल सर्वेस जैसे तमाम फील्ड्स में औरों की तुलना में बढ़त हासिल कर सकते हैं। इसके अलावा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी मैथ्स जानने वाले फायदे में रहते हैं।

कोचिंग के विकल्प

मैथ्स को समझने के अलावा ढंग से समझा पाने की योग्यता आप यदि हासिल कर लेते हैं तो छोटी-बड़ी मैथ्स की कोचिंग क्लासेस में भी हाथ आजमा सकते हैं। इस फील्ड में हमेशा से अच्छा पैसा रहा है। अपनी योग्यता के अनुसार आप डिग्री लेवल तक के स्टूडेंट्स को भी मैथ्स की कोचिंग दे सकते हैं।

कैसे करें अभ्यास

मैथ्स पर कमांड तभी संभव है जब आप इसे समझने की कोशिश करें न कि रटने की। बहुत से लोग एक्जाम पास कर जाने के लिए सवाल रटकर जाते हैं। यह अप्रोच लंबे समय तक नहीं चल सकती। मैथ्स के कॉन्सेप्ट को सरल ढंग से समझने के बाद उससे जुड़े सवाल हल करें। सवालों के लिए भी कई किताबों की मदद लें। मैथ्स को समझने और समझाने के लिए इसे दैनिक जीवन से जोड़कर देखें।

हर्षलता मंडलोई
बी.एड.

कुछ अलग हटकर सोचें

हमारे समाज में कई ऐसे मुद्दे हैं जिनका समाधान जरूरी है। लेकिन इसके लिए पहले लोगों की सोच बदलना बेहद जरूरी है। उदाहरण के लिए हम सम्मेलनों और सभाओं में तो बेटी बचाने की बात करते हैं लेकिन धरातल पर हकीकत कुछ अलग ही है। आज भी बहुत से लोगों की ये सोच है कि बेटी को जन्म ही नहीं लेने दिया जाए। ऐसे में उन्हें सुरक्षित, शिक्षित और सशक्त करने के दावे तो सिर्फ दावे ही रह जाते हैं। यही वजह है कि देश में लिंगानुपात में अंतर लगातार बढ़ता जा रहा है। ऐसे में महिला सशक्तीकरण की बात हकीकत कम और फसाना ज्यादा लगती है। यदि इस स्थिति को बदलना है तो सभी को मिलकर कुछ अलग हटकर सोचना होगा और हर एक को अपने स्तर पर बदलाव की शुरुआत करना होगी। हमेशा दूसरों से कुछ अलग सोचना चाहिए और कुछ अलग हटकर करना भी चाहिए। हाल ही में मैंने डॉ. मोनिका शर्मा का ब्लॉग पढ़ा था जिसमें उनका मानना है कि हमेशा दूसरों से अलग हटकर सोचना चाहिए और कुछ अलग हटकर करना भी चाहिए। ब्लॉग में जहां बेटियों के अधिकारों की बात कही गई है वहीं राजनीति की गिरती गरिमा पर भी चिंता जाहिर की गई है। एक पोस्ट में उन्होंने लिखा था कि बेटियों को बचाना है तो दिखावा नहीं बल्कि कुछ कारगर कदम उठाना जरूरी है। इसकी शुरुआत इसी से हो सकती है कि किसी भी घर-परिवार में बेटी का जन्म बाधित न हो। हमारी अपनी मानसिकता और बेटियों के प्रति स्नेह व सम्मान का भाव यह परिवर्तन ला सकता है।

कृष्णा शिंदे
बी.एड.

माता-पिता

जो मात-पिता है पूज्य अरे, तुम उनको क्यों ठुकराते हो,

जिन्होंने तुमको पाला-पोसा, उनको ही क्यों अकड़ बताते हो।

बचपन में जब रोते देखा, तुम्हें गोद में उठा लिया,

थोड़ा भी देखा दुखी अगर, चूमा-पुचकारा प्यार किया।

उपकार अपार किए इन्होंने, क्या इन सबको तुम भूल गए,

स्वयं भूख सहकर मां ने तुमको भरपेट खिलाया है,

खुद तो गीले में सोई सूखे में तुमको सुलाया है

नस-नस में आंचल में जो दूध प्रवाहित होता है

क्यों उसे कलंकित करते हो

उन्होंने तुमको फूल बिछाए

तुम उनको क्यों कांटे देते हो

याद रखना सीख हमारी

जैसा तुम उनके साथ करोगे

संतान तुम्हारी वैसा ही तुम्हारे साथ करेगी।

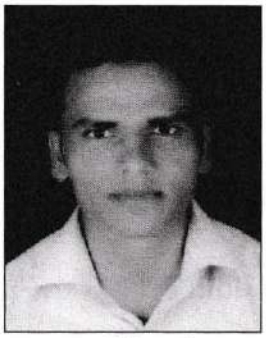

लक्ष्मणसिंह चौहान
ग्रंथपाल

ज्ञान-प्रसार का साधन पुस्तकालय

पुस्तकालय की सहायता से ज्ञान में जो वृद्धि मिलती है वह किसी अन्य साधन से नहीं मिलती। वास्तव में शिक्षक तो विद्यार्थियों का केवल मार्गदर्शन ही करते हैं जबकि पुस्तकालय उन्हें पूरा ज्ञान उपलब्ध करवाता है। किसी भी विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए किसी एक पुस्तक का अध्ययन कारगर नहीं होगा बल्कि उसके लिए कई पुस्तकों का अध्ययन जरूरी होगा। ऐसे में पुस्तकालय ही हमारी सहायता करते हैं।

पुस्तकालय मनुष्य को सत्संग की सुविधा भी प्रदान करता है। पुस्तक पढ़ते-पढ़ते कभी मनुष्य मन ही मन प्रसन्न हो उठता है तो कभी खिल-खिलाकर हंस भी पड़ता है। उत्तम पुस्तकों के अध्ययन से हमें मानसिक शांति प्राप्त होती है। उस समय संसार की समस्त समस्याओं, चिंताओं से पाठक मुक्त हो जाता है। पुस्तकालय हमेशा हमारे लिए नवीन साथियों की योजना करता है जिसके साथ चाहें आप बैठकर बातों का आनंद ले सकते हैं, चाहे वह शेक्सपिअर हो या कालिदास, न्यूटन हो या प्लेटो, अरस्तु, शंकराचार्य ही क्यों न हो।

आधुनिक युग में प्रायः मनोरंजन के अनेक साधन हैं। शाम को सिनेमाघरों में ऐसी भीड़ रहती है जैसे त्यौहारों पर मंदिरों में रहती है। कोई खेलने में ही व्यस्त है तो कोई दुर्व्यसनों का ही आनंद ले रहा है। कोई-कोई तो रेडियो पर ही कान लगाए बैठा रहता है। परंतु ये सभी मनोरंजन के साधन पुस्तकालय के सामने नगण्य हैं क्योंकि पुस्तकालय से मनोरंजन के साथ-साथ पाठक का ज्ञानवर्धक विकास भी होता है। हमारे अवकाश के क्षणों का जितना सुंदर उपयोग पुस्तकालयों में हो सकता है उतना किसी अन्य स्थान से नहीं। बुद्धिमान व्यक्ति सदैव श्रेष्ठ पुस्तकों के अवलोकन में ही अपने विश्राम के क्षणें का उपयोग करता है। अपने रिक्त समय को पुस्तकालयों में व्यतीत करना समय की सबसे बड़ी उपयोगिता है।

पुस्तकालय वास्तव में ज्ञान का अनंत भंडार है। देश की शिक्षित जनता के लिए उन्नति का सर्वोत्तम साधन पुस्तकालय ही है। भारतवर्ष में वैसे कई अच्छे पुस्तकालय हैं मगर फिर भी इनकी संख्या में बढ़ोतरी करने की सख्त आवश्यकता है जिसके लिए सरकारें प्रयत्नशील हैं।

नीतू निगवाल
बीएड

समाज के वास्तविक शिल्पकार शिक्षक

एक अच्छा शिल्पकार किसी भी प्रकार के पत्थर को तराशकर उसे सुंदर आकृति का रूप दे सकता है। किसी भी मूर्ति को तराशने में शिल्पकार की बड़ी भूमिका होती है। इसी प्रकार एक अच्छा कुम्हार वही होता है जो गीली मिट्टी को सही आकार प्रदान कर उसे समाज के लिए उपयोगी बर्तन अथवा एक सुंदर मूर्ति का रूप दे देता है, यदि शिल्पकार तथा कुम्हार द्वारा तैयार की गई मूर्ति एवं बर्तन सुंदर नहीं है तो वह जिस स्थान पर रखे जाएंगे उस स्थान को और अधिक विकृत स्वरूप ही प्रदान करेंगे।

एक शिल्पकार और कुम्हार की भांति ही स्कूलों एवं उसके शिक्षकों का यह प्रथम दायित्व एवं कर्तव्य है कि वह अपने यहां अध्ययनरत सभी बच्चों को इस प्रकार से सजाए और संवारे कि उनके द्वारा शिक्षित किए गए सभी बच्चे विश्व का प्रकाश बनकर सारे विश्व को अपनी रोशनी से प्रकाशित कर सकें।

इस प्रकार शिक्षक उस शिल्पकार या कुम्हार की भांति होता है जो प्रत्येक बालक को समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप एक सुंदर आकृति का रूप प्रदान कर उसे समाज का प्रकाश अथवा उसे विकृत रूप प्रदान कर समाज का अंधकार बना सकता है।

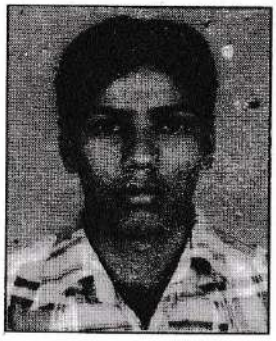

दीपक वर्मा
बीएड

देशप्रेम

हमारे देश के एक महान संत स्वामी विवेकानंदजी एक बार अमेरिका गए। वे रेल में यात्रा कर रहे थे। हुआ यूं कि उन्हें खाने को फल नहीं मिला जबकि वे उन दिनों फलाहार पर ही थे। गाड़ी किसी स्टेशन पर रुकी तो उन्होंने वहां भी फल तलाश किए मगर नहीं मिले। तभी उनके मुंह से निकला अमेरिका में अच्छे फल नहीं मिलते। प्लेटफॉर्म पर खड़ा एक अमेरिकी युवक ने यह सुन लिया। वह भागा और कहीं दूर से एक टोकरी फल ले आया। उसने वे फल स्वामीजी को भेंट किए और कहा- लीजिए आपको फलों की जरूरत थी।

स्वामीजी ने सोचा वह कोई फल बेचने वाला होगा अतः उन्होंने उससे उन फलों के दाम पूछे। पर उसने दाम लेने से इंकार कर दिया। पर बहुत ही आग्रह करने पर उसने कहा- आप इनका मूल्य देना ही चाहते हो तो अपने देश में जाकर यह मत कहिएगा कि अमेरिका में अच्छे फल नहीं मिलते। स्वामीजी युवक का उत्तर सुनकर मुग्ध हो गए। उस युवक के विचारों से उसके देश का मान अपने आप बढ़ गया।

हम भी यह समझ लें कि हमारी हीनता और श्रेष्ठता का संबंध देश ही हीनता और श्रेष्ठता से जुड़ा हुआ है। जब हम कोई हीन या बुरा काम करते हैं तो हमारे माथे पर कलंक का टीका ही नहीं लगता बल्कि देश का भी सिर नीचा होता है और उसकी प्रतिष्ठा गिरती है। जब हम कोई अच्छा या भला काम करते हैं तो उससे हमारा ही सिर ऊंचा नहीं होता बल्कि देश का भी सिर ऊंचा होता है और उसका गौरव बढ़ता है। इसलिए हमें ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे देश की प्रतिष्ठा पर आंच आए या उसे कोई ठेस पहुंचे।

गायत्री चौहान
बी.एड.

भ्रूण हत्या

अपने हिस्से का जीवन जीना चाहती हूं
दुनिया के रंग, दुनिया के संग
मैं भी जीना चाहती हूं।
मां मैं कोख में तेरी आई
फिर जन्म क्यों न ले पाई।
न कोई जाने मेरा मर्म,
मेरी कब्र बन गया कैसा तेरा गर्भ
अस्तित्व अपना मिटने पर भी
आंसू तक न बहा पाई
दुर्दशा देखकर मेरी तो
ब्रह्मा भी पछताया होगा
संग मुझे ले जाते हुए
यमराज भी थर्राया होगा।
जन्म लेने दो मुझे भी
बेटे से बढ़कर दिखाऊंगी
घर के सुख क्या चीज हैं
तोड़ आसमां के तारे लाऊंगी
अगर बेट मरवाओगे
ममता मां की कैसे पाओगे
खो जाएगा कहीं बहन का प्यार
दुलार किस पर बरसाओगे
अंतिम संदेश यह है मेरा
बचाओ जीवन अजन्मी बिटिया का
अस्तित्व वर्ना मिट जाएगा
इस दुनिया से मानव का।

महेश यादव

जाने कैसा नाता

इस दिल का उस दिल से जाने कैसा नाता है
तकलीफ में देख मुझे उसका दिल भर आता है
सुना है बचपन में न सोती थी वो मुझे रोता देख
आज भी मेरी खुशी की दुआ मांगती है वो
दर्द मेरा उससे कहां सहा जाता है ?
तकलीफ में देख मुझे उसका दिल भर आता है
सारा दिन चिंता में सारी रात दुआओं में गुजार देती है वो
जब मालूम उसे पड़ता है तकलीफ में हूं मैं
मेरा सारा दर्द मानो उसकी आंखों में आ जाता है
मेरी एक हंसी के लिए अपने सारे सुख वार देगी वो
खुशियां ऐसे लाएगी जैसे रोशनी सूरज लाता है
दुख मेरा उसे देखते ही अंधेरे में कहीं खो जाता है
तकलीफ में देख मुझे उसका दिल भर आता है
आज उसकी कमजोर आंखों को देख सोचा मैंने
क्यों इनमें इतना प्यार नजर आता है ?
बचपन से अब तक सब हो गया है परिवर्तन इतना
फिर क्यों इन आंखों में कोई बदलाव नजर नहीं आता है ?
तकलीफ में देख मुझे उसका दिल भर आता है
सुना है वक्त के हाथों से कोई नहीं बच पाया है
तो क्या उसका भी साया छिन जाएगा ?
जब-जब भी खयाल आया, तब-तब मन घबराया है
क्या उसकी कमी को पूरा करने के लिए
भगवान ने किसी और को बनाया है ?
कहां से लाऊं उसके जैसा कोई
उस जैसा सिर्फ उसे ही पाया है
उसके बाद कौन देगा आंचल अपना रोने को ?
जब भी देखती है वो मुझे ममता भरी निगाहों से
मन सवालों की किसी आंधी में खो जाता है
क्या कोई और है मां तेरे ही जैसा
तकलीफ में देख मुझे उसका दिल भर आता है

आर.एन. गर्ग
सचिव

कैसा शासन, बिना अनुशासन

जैसा कि हम सभी जानते हैं और मानते भी हैं कि मानव इस सृष्टि की सर्वोत्तम रचना है। अपने कर्तव्यों का उचित निर्वाह करने वाला वास्तव में मानव ही है। कोई भी देश अपने नागरिकों के कारण ही उन्नति के शिखर पर चढ़ता है या पतन के गर्त में गिरता है। इसलिए किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए वहां के नागरिकों को अनुशासनबद्ध रहना चाहिए।

अनुशासन शब्द शासन में 'अनु' उपसर्ग लगाने से बनता है। अनु का अर्थ है बाद में या पीछे जबकि शासन का अर्थ है विधान, कानून, नियम आदि। अतः सामान्य मानवीय नियमों के अनुसार चलना ही अनुशासन है। अनुशासन चाहे किसी भी क्षेत्र का हो इसका महत्व अपार है। मेरी समझ से तो अनुशासन जीवन का एक वरदान है। अनुशासन के बिना मनुष्य ऐसे ही है जैसे इंजन के बिना गाड़ी और ब्रेक के बिना इंजन।

अगर हम सभी गौर करें तो देखेंगे कि स्वयं प्रकृति भी अनुशासन पालन करने का उपदेश देती है। सूर्य, चंद्रमा, तारे और ऋतुएं सभी एक अनुशासनबद्ध तरीके से उदित एवं अस्त होते हैं। इतिहास भी इस बात का साक्षी है कि अनुशासन ही विकास का द्वार है। बाबर की अनुशासित सेना ने इब्राहिम लोधी की विशाल सेना को बुरी तरह हराया था। अनुशासन के बिना तो सेना भी एक बर्बर भीड़ के ही समान है। अतः अनुशासन का महत्व स्वयंसिद्ध है।

अब प्रश्न यह उठता है कि बच्चों में अनुशासनहीनता की समस्या का कारण क्या है ? सर्वप्रथम कारण यह है कि माता-पिता का अनुचित लाड़-प्यार। आज बच्चा अपने घर से ही उचित संस्कार प्राप्त नहीं कर पाता। फलस्वरूप बड़ा होकर उसमें अनुशासनहीनता घर कर जाती है। दूसरा कारण है आधुनिक शिक्षा का व्यावहारिक जीवन से अलग होना। बच्चे जो कुछ सीखते हैं, पढ़ते हैं वास्तविक जीवन का उससे कोई संबंध नहीं होता। बड़ी-बड़ी डिग्रियां प्राप्त करके भी वे स्वयं को सामाजिक जीवन के अनुरूप नहीं ढाल पाते। इसी से अनुशासनहीनता जन्म लेती है। इसलिए यदि हम अनुशासनहीनता को समाप्त करना चाहते हैं तो उपरोक्त दोनों कारणों की ओर ध्यान देना होगा। एक बच्चों को बचपन से ही उचित और अच्छे संस्कार देने होंगे दूसरा शिक्षा में समुचित सुधार करना होंगे।

आज का मानव अपने आप को तनावग्रस्त महसूस करता है। तनाव से उबरने के लिए उसे अनुशासन की बहुत आवश्यकता है। यदि हम अभी भी अनुशासन के महत्व को नहीं समझेंगे तो इसके बहुत बुरे परिणाम होंगे। हमारी स्वतंत्रता खतरे में पड़ जाएगी। इसी विषय में हम सभी को सावधान करते हुए हरिकृष्ण प्रेमीजी ने कहा है कि देश को बलयुक्त करने यदि न चले अनुशासन में हमतो कल होगा फिर हमें दासतां की जंजीर पहननाहै सरल आजाद होना पर कठिन है आजाद रहना। ये पंक्तियां बताती हैं कि स्वतंत्रता स्थाई रखने के लिए अनुशासन कितना महत्वपूर्ण और आवश्यक है। अंत में मैं सभी भारतवासियों से विनयपूर्वक अनुरोध कर रहा हूं कि अनुशासन को न भुलाएं बल्कि इसे अपना ही अंग समझकर सदा इसका पालन करें, इसके साथ चलें और अनुशासनहीनता को जड़ से उखाड़ फेंकें।

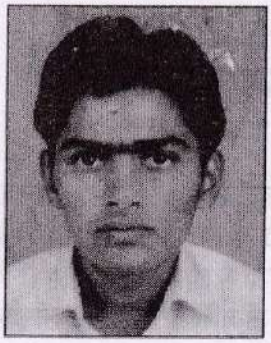

दीपक पाटीदार
बी.एड.

रक्षा करें मेरे वतन की

क्या इसकी शान में कहूं तुमको
यह ताज है ऐसा पहनूं
इसे मिटाने वाला खुद कहता
भारत की ताकत के क्या कहने।
इसने जन्म दिया राम को महावीर को
कान्हा ने माखन यहीं चुराया।
रसखान ने देखा महारास को
गांधी ने नमक यहीं बनाया।
आजादी का पावन गहना
हमने इसको पहनाया है।
तीन रंग का आंचल मां का
भारत भू पर लहराया है।
किन हाथों ने जकड़ा है
प्रजातंत्र के महाजाल में
देश बना कोई मकड़ा है
रीढ़ की हड्डी लगे तोड़ने
वो गद्दार कहो है कौन ?
बाबू क्यों पाषाण बने ?
कब तोड़ोगे अपना मौन ?

नेहा गुप्ता
बी.एड.

परीक्षा की रात

अंधेरी रात में पुस्तक ले हाथ में

पढ़ने की ताक में बैठी थी मैं

सर पर था इम्तिहान टूट रहा था आसमान

आफत में थी मेरी जान, क्या पढ़ूं, क्या न पढ़ूं ?

मौज उड़ाई पूरा साल, अब था मेरा बुरा हाल

बिगड़ने को था मेरा साल, दिल कहता था बार-बार

दिमाग कहता था चढ़ा बुखार

दिल कहता था बार-बार।

हे प्रभू, अबकी कर दो बेड़ा पार

फिर न करूंगी ऐसा धमाल

पढ़ाई करूंगी पूरा साल।

कोमल पाटीदार
बी.एड.

वीर

संकटों से वीर घबराते नहीं
आपदाएं देख छिप जाते नहीं
काम करके व्यर्थ पछताते नहीं।
हो सरल अथवा कठिन हो रास्ता
कर्मवीरों को न इससे वास्ता
बढ़ चले अंत तक ही बढ़ चले
कठिन पथ को देख मुस्कुराते सदा
संकटों के बीच वे गाते सदा
है असंभव कुछ नहीं उनके लिए
सरल-संभव कर दिखाते वे सदा
यह असंभव कायरों का शब्द है
कहा था नेपोलियन ने एक दिन
सच बताऊं जिंदगी ही व्यर्थ है-
दर्प बिन, उत्साह बिन और शक्ति बिन।

सीमा सावनेर
एम.एड.

अच्छा व्यवहार परमात्मा की देन है

इस दुनिया में संतुष्ट और सुखी जीवन के लिए व्यवहारकुशल होना बहुत जरूरी है। हमारा विनम्र व्यवहार हमारी योग्यता दर्शाता है। हमारी सोच का इस पर विशेष प्रभाव पड़ता है। हम आज तक जहां पहुंचे हैं और उन्नति की है उसमें हमारे व्यवहार का विशेष प्रभाव रहा है। अच्छे व्यवहार से मित्रता बढ़ती है और मित्रता जीवन में एक सुदृढ़ शक्ति के रूप में हमारे साथ रहती है। ज्ञानवान मित्र जीवन के लिए हमेशा वरदान रहे हैं, इसलिए हमें अपने मित्रों का सम्मान करना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर एक-दूसरे की सहायता करनी चाहिए। लेकिन कुछ लोग जीवन में ऐसे आते हैं जिनका व्यवहार अच्छा नहीं होता। ऐसे लोगों से एक निश्चित दूरी बनाए रखेंगे तो ही अच्छा होगा। ऐसे लोगों में न तो व्यवहार मिलता है और न ही प्रेम में शुद्धता ही रहती है। रिश्तों की नींव सोच-समझकर रखें। कुछ लोग तो संबंधों की गहराई को अच्छे से समझते हैं मगर कुछ लोगों को इसका अहसास तक नहीं होता। समस्याओं के घेरे में उलझा व्यक्ति अच्छा या बुरा व्यवहार करता है यह स्वाभाविक है लेकिन अपनी नम्रता और प्रतिभा को अपनाते हुए रिश्तों को निभाएं। हमारे व्यवहार और विचारों में अंशमात्र की भी बुराई नहीं होना चाहिए। मन जीवन की राह बनाता है। अच्छा व्यवहार और विचार अच्छे पुष्पों को चुनता है। इसको कार्यरूप में परिणित करना एक माला गूंथने के समान है।

हम जो बोएंगे वही काटेंगे यही सिद्धांत है। हमसे गलतियां तो होती ही रहती हैं। गलतियां कभी भी ज्ञान की नहीं होती बल्कि हमारे निर्णय की होती हैं। गलतियों से सीखें और प्रयास करें खाई को पाटने का। अपने अच्छे विचारों और मधुर व्यवहार से सभी को अपना बनाने का प्रयास लगातार होना चाहिए। हम जहां हों अपने कुशल व्यवहार से खुशनुमा वातावरण बनाएं और चारों तरफ खुशियां बिखेरें।

शैफाली सिंह

भारतीय नारी की कहानी

बचपन से ही हमें पढ़ाया जाता है कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं लेकिन आज हम देखते हैं कि नारी का हर जगह अपमान हो रहा है। उसे वस्तु समझकर आदमी अपनी तरह से इस्तेमाल कर रहा है। जिस देश में नारी सम्मान की बात की जाती है उसी देश में उनके साथ छेड़छाड़, कुकर्म, घरेलू हिंसा जैसी घटनाएं होती रहती हैं। छोटी बच्चियां भी शरीरिक शोषण और बलात्कार का शिकार हो रही हैं। ऐसे में देश की आधी आबादी कही जाने वाली नारी की सुरक्षा और सम्मान एक चुनौती बन गई है। आज भी नारी न तो अबला है, न लाचार और न ही कमजोर। उसे अपने पैरों पर खड़ी होकर जीवन जीने का अधिकार है मगर पुरुष प्रधान समाज उसकी राह में रोड़े अटकाने से बाज नहीं आता है। ऐसे में महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने के लिए कोई ठोस कदम उठाने की सख्त आवश्यकता है। आज नारी सशक्तीकरण पर कई ब्लॉग लिखे जा रहे हैं जिसमें नारी के साथ हो रहे अत्याचार के प्रति विरोध भी जताया जा रहा है और चुनौतियों का सामना करने के लिए उपाय भी खोजे जा रहे हैं। ब्लॉगों के माध्यम से कविताओं और लेखों के माध्यम से संस्कारों और परोपकारों की प्रतिमूर्ति कहलाने वाली नारी की आवाज को उठाने का प्रयास किया गया है। एक ब्लॉग में कविता के माध्यम से उस स्त्री की मनोदशा का वर्णन किया गया है जिसकी स्वयं की कोई इच्छा नहीं रहती बल्कि वह पति को खुश करने के लिए जीती है। एक अन्य कविता में कहा गया है कि आदमी लगातार औरतों पर जुल्म तो कर रहे हैं मगर वह उन्हें कबूलना भी नहीं चाहते। ऐसे कई प्रयासों से नारी को उसका असली स्थान दिलाने के प्रयास हो रहे हैं। काश वह दिन भी आए जब नारी को उसका असली सम्मान और दर्जा मिलेगा।

असलम खान

जीवन में तीन चीजों का महत्व

समय, बोले गए शब्द और अवसर- ये तीनों चीजें ऐसी हैं जो जीवन में एक बार जाने के बाद कभी वापस नहीं आती।

धैर्य, आशा और ईमानदारी- ये तीन चीजें मनुष्य को जीवन में कभी नहीं खोना चाहिए।

प्यार, आत्मविश्वास और सच्चे दोस्त- ये तीन चीजें जीवन में अतिमहत्वपूर्ण हैं।

परिश्रम, तन्मयता और वचनबद्धता- ये तीन चीजें मनुष्य जीवन को सर्वश्रेष्ठ बनाती हैं।

चिंता, अहंकार और क्रोध- ये तीन चीजें मनुष्य जीवन को पूर्णतः नष्ट कर देती हैं।

GOD ये तीन अक्षर ईश्वर हैं।

अर्थात

G for Genretor अर्थात पैदा करने वाला।

O for Opretor अर्थात संचालन करने वाला तथा

D for Director अर्थात निर्देशित करने वाला।

इन तीन अक्षरों में हमेशा विश्वास रखना चाहिए क्योंकि ईश्वर ही हमें शक्ति देता है, चलाता है और निर्देशित भी करता है।

डॉ. वैशाली तिवारी
सहायक प्राध्यापक

शिक्षण प्रभावशीलता

किसी भी शिक्षण प्रणाली के उद्देश्यों की प्राप्ति में शिक्षक-विद्यार्थियों एवं पाठ्यक्रम तीनों अवयवों का अलग-अलग एवं सम्मिलित योगदान महत्वपूर्ण होता है। इनमें से एक की भी अनुपस्थिति शिक्षा प्रणाली को अधूरा स्वरूप प्रदान करती है तथा एक के भी अहसयोग होने पर भौतिक उद्देश्यों की प्राप्ति असंभव है। इसके अतिरिक्त शिक्षण अधिगम उद्देश्य, शिक्षण विधियां एवं शैक्षिक तथा सामाजिक वातावरण कुछ अन्य आधारभूत तत्व हैं जो शिक्षण एवं अधिगम को सफल एवं सौदेश्य बनाने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं। शिक्षण को प्रभावी बनाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान है।

अत: शिक्षण प्रभावशीलता से तात्पर्य सीधे अर्थ में यही होगा कि छात्र के अधिगम की प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावशीलता बनाया जाए। जिससे यह अधिकाधिक अनुभव प्राप्त कर उन्हें अपने व्यवहार में ढाले। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक छात्र को सूचना प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रविधियों का उचित समय पर प्रयोग कर उसे प्रभावी बनाता है। शिक्षण प्रभावशील होने से छात्रों को विषयवस्तु सरलता से शीघ्र समझ में आती है तथा अधिक समय तक अधिक सामग्री स्मरण में रहती है। शिक्षण प्रभावी होने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक विषय-वस्तु को सुनियोजित कर पाठ योजना बनाकर पढ़ाए। पाठ नियोजित करते समय पाठ के सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्य अत्यंत स्पष्ट होने चाहिए। विषय-वस्तु शिक्षण के सिद्धांतों के आधार पर सुनियोजित करनी चाहिए। जैसे ज्ञात से अज्ञात की ओर, सरल से कठिन, जटिल की ओर तथा स्थूल से सूक्ष्म की ओर प्रवाहमान होनी चाहिए। पाठ शिक्षण की विधियां, प्रविधियां तथा तकनीकियां विषय-वस्तु के संगत हो जो छात्रों में मौलिक चिंतन का विकास करती हों। विषय-वस्तु को समझाने में सरल व संगत बनाने के लिए सहायक सामग्री का समुचित उपयोग किया गया हो तथा विधिवत मूल्यांकन कर यह जानने का प्रयास किया गया हो कि छात्रों की उपलब्धि का स्तर क्या है ? उनकी कठिनाइयों को दूर करने के लिए निदानात्मक कार्यक्रम भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। एक प्रभावी शिक्षक उसे कहते हैं जो छात्रों में मौलिक कौशलों, अवबोध उपयुक्त कार्य आदतें, वांछित अभिव्यक्ति मूल्यों की परख एवं उपयुक्त व्यक्तिगत समायोजन विकसित करता है।

शिक्षण प्रभावशीलता से तात्पर्य है प्रभावक रूप से प्रस्तुतिकरण अर्थात पूर्व निर्धारित उद्देश्यों तथा वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों की सरल, सुगम तथा वस्तुनिष्ठ रूप से प्राप्ति हेतु ऐसे शिक्षण जो रोचक हो, आकर्षक हो तथा छात्रों को पुनर्बलन प्रदान करता रहे, प्रभावी समझा जाता है।

शिक्षण प्रभावशीलता के कारक

1. वैयक्तिक विभिन्नताएं
2. शिक्षण उद्देश्य
3. कक्षा की संवेगात्मक स्थिति
4. शिक्षण का व्यक्तित्व एवं कुशलता
5. परिणामों की शीघ्र जानकारी
6. भौतिक संसाधन एवं भौतिक सामग्री
7. परिवार का वातावरण
8. पाठ्यक्रम
9. विद्यालय का वातावरण
10. शिक्षण विधियां
11. कक्षा प्रबंधन
12. शिक्षण क्रियाओं का नियोजन
13. अभिप्रेरणा और मार्गदर्शन

पूर्व निर्धारित उद्देश्यों तथा वांछित व्यवहारगत परिवर्ततनों की सरल, सुगम तथा वस्तुनिष्ठ रूप से प्राप्ति हेतु ऐसे शिक्षण जो रोचक हो, आकर्षक हो तथा छात्रों को पुनर्बलन प्रदान करे, प्रभाव समझा जाता है।

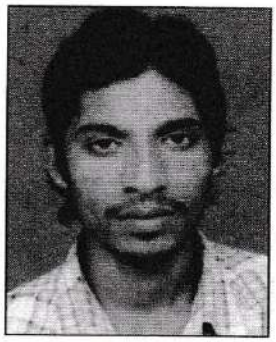

मुकेश छटिये
बी.एड.

सबको साथ लेकर चलें

अगर आप अपने अंदर लीडरशिप क्वालिटी विकसित करना चाहते हैं तो आपको अपनी कमियों पर गौर करना होगा और दूसरों की अच्छाइयों को प्रोत्साहित करना होगा। हो सकता है कि आपके टीम मेंबर्स अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पा रहे हों पर यह आपका दायित्व है कि उन्हें प्रेरित करें, उनमें जोश भरें। इसके लिए जरूरी है कि आप अपने दायरे से बाहर निकलें। खुद को आईने के सामने रखकर पता करते रहें कि मैं खुद में डूबा इंसान तो नहीं हूं। खुद को प्यार करना अच्छा है लेकिन दूसरों को कमतर आंकने से बचें। अगर आप खुद सकारात्मक नहीं हैं तो टीम में आत्मविश्वास कहां से आएगा? इससे आप रिजल्ट्स तक तो पहुंच नहीं पाएंगे बल्कि अपने दुश्मन जरूर पैदा कर लेंगे। क्या आप चाहते हैं कि टीम मेंबर्स आपके सामने तारीफों के पुल बांधें और पीठ पीछे आपको कमजोर करने की प्लानिंग करें। अगर ऐसा नहीं चाहते तो टीम के सदस्यों का सच्चा हितैषी बनें, उनके काम का सही तरीके से विश्लेषण करें। कोई भी व्यक्ति आत्ममुग्ध तभी हो सकता है जब वह असुरक्षा की भावना से ग्रस्त हो। आप लीडर हैं आपको हर बाधा को पार करना है। आपको खुद को पोषित करने की भावना छोड़ देनी चाहिए। इस बात को भी हमेशा हमेशा के लिए दिमाग से निकाल दें कि आप ही सर्वश्रेष्ठ हैं।

मनोज कुमार कौशले
सहायक प्राध्यापक

शिक्षक की जिम्मेदारी ही उसकी गरिमा

शिक्षा की महत्ता, गरिमा, उपयोगिता और आवश्यकता का वर्णन अनादिकाल से लेकर अब तक के सभी मनीषियों ने पूरा जोर देते हुए किया है। यही कारण है कि `विद्या से अमृत प्राप्त होने' जैसे सूत्रों का प्रचलन हुआ। सरस्वती पूजन प्रकारांतर से विद्या की ही अभ्यर्थना है। गणेश पूजन भी इसी संदर्भ में किया जाता है। विद्वान सर्वत्र पूजे जाते हैं जबकि शासन अधिकारी केवल अपने क्षेत्र में ही पूजे जाते हैं। धन-संपत्ति जिस-तिस प्रकार खर्च होती, चुराई जाती, नष्ट की जाती भी देखी जाती है किंतु ज्ञान संपदा बांटने पर यह अन्य पदार्थों की भांति घटती नहीं है बल्कि और अधिक बढ़ती ही जाती है तथा संस्कारों के रूप में यह जन्म-जन्मांतरों तक कायम रहती है।

विद्यादान को सर्वोत्कृष्ट दान माना गया है। अन्न, वस्त्र, औषधि, धन आदि के अनुदान कष्ट-पीड़ितों एवं अभावग्रस्तों की सामयिक सहायता भर करते हैं। इससे तत्काल राहत तो मिल जाती है जो आवश्यक भी है मगर चिरस्थाई समाधान इतनेभर से कतई नहीं होता। इसके लिए श्रमशीलता, दूरदर्शिता, सूझबूझ के सहारे स्वावलंबन के चिरस्थाई प्रबंध करने होते हैं। यह सब योग्यता और प्रतिभा के सहारे ही किया जा सकता है। स्पष्ट है कि स्थिर समाधान के लिए सुविकसित, समुन्नत स्तर पाने के लिए शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन आधारों के सहारे स्वयं भी पार हुआ जा सकता है और अपनी नाव में बिठाकर औरों को भी पार किया जा सकता है। छात्र शिक्षा के साथ-साथ ऐसा कुछ सीखता रहे जिससे बिना नौकरी खोजे वह अपने क्षेत्र में, अपने बलबूते पर अपनी आजीविका चला सके। दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष है- सुसंस्कारिता संवर्धन की विद्या। विद्यार्थी में इसे गहराई से जमाने-सींचने के लिए आज की परिस्थितियों में अकेला अध्यापक वर्ग भी बिना किसी बाहरी सहायता के बहुत कुछ करके दिखा सकता है। इस सचाई

को चरितार्थ कर दिखाने वाले अनेक उदाहरण मौजूद हैं। अध्यापक को अपनी गरिमा समझने और चरितार्थ कर दिखाने में वर्तमान परिस्थितियां भी बाधा नहीं पहुंचा सकती। जहां शिक्षणतंत्र के वेतन, सुविधा-साधनों को बढ़ाए जाने की बात है वहां तक तो अधिकाधिक साधन जुटाने का समर्थन ही किया जाएगा। पर इसमें यदि कुछ कमी रहे, अड़चन पड़े तो भी यह तो हो ही सकता है कि अध्यापकगण अपनी गुरु-गरिमा को अपने ही बलबूते बनाए रहें और अपने गौरव का महत्व अनुभव करते हुए बढ़ते चलें। शिक्षा एक प्रतिपादन है जबकि उसका मूर्तरूप शिक्षक है। माता, पिता और गुरु को त्रिदेव की उपमा दी गई है। इनमें से माता तो जन्म देती है, पिता पोषण करता है और गुरु तो नर को शिक्षा-दीक्षा से अलंकृत कर नर-देवों की पंक्ति में बिठा देता है। इसीलिए उसके लिए अधिक श्रद्धा व्यक्त की गई है, उसको आदर-मान आदि दिया गया है। परंतु गरिमा के अनुरूप शिक्षक को अपना स्तर ऐसे सांचे के सदृश बनाना चाहिए जिसके संपर्क में आने वाले कच्ची मिट्टी जैसे मनमोहक खिलौनों के रूप में ढलते चले जाएं। ऐसा कर पाने पर ही यह अपेक्षा की जाती है कि न केवल छात्र अभिभावकों का समुदाय वरन सारा समाज उन्हें भावभरी श्रद्धा प्रदान करेगा और उनका आदेश मानने में पीछे नहीं रहेगा।

शिक्षा को स्कूली पाठ्यक्रम कहा जाए तो सुसंस्कारिता संवर्धन से संबंधित सभी प्रयासों को दीक्षा कहना होगा। स्कूली पढ़ाई पूरी कराना तो आवश्यक है ही। इसे वेतन के लिए किया गया परिश्रम भी माना जा सकता है पर बात इतने तक सीमित नहीं समझी जा सकती। करणीय यह भी है कि जिस प्रकार माता-पिता बच्चों के प्रति भावनाशील और प्रयत्नरत रहते हैं उसी प्रकार अध्यापक भी अपने संपर्क के छात्रों में शालीनता, सज्जनता, श्रमशीलता, जिम्मेदारी, बहादुरी, ईमानदारी और समझदारी जैसी सत्प्रवृत्तियों को विकसित करने में कसर न रखें। यह प्रयास भी उनकी वह सेवा होगी जिसके आधार पर सुविकसित नई पीढ़ी को समाज के नवनिर्माण का श्रेय-सुयोग मिलेगा। इन्हीं प्रयत्नों में निरत रहने वाले शिक्षक समूचे समाज को अपना ऋणी बना सकते हैं। स्वयं ही अपनी गरिमा में भी चार चांद लगा सकते हैं।

ज्योति गहलोत
बी.एड.

बच्चों को मिले शिक्षा की ताकत

आर्थिक दिक्कतों के कारण पढ़ाई छोड़ देने वालों को शिक्षा से जोड़ने का कार्यक्रम लाने की बात केंद्र सरकार ने कही है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो इस समस्या को महसूस करते हुए अपने हिस्से का योगदान कर रहे हैं। आंध्रप्रदेश की कडप्पा निवासी इंदु बख्शी दत्ता उनमें से एक है। शिक्षा के महत्व को समझने वाली इंदु आर्थिक रूप से पिछड़े बच्चों को शिक्षित बना रही हैं।

कैसे हुई शुरुआत

इंदु के घर में काम करने वाली नौकरानी के बच्चों के परीक्षा में खराब प्रदर्शन की वजह से उनके स्कूल छोड़ने की नौबत आ गई थी। यहीं से इंदु को इन बच्चों के लिए कुछ करने का ख्याल आया। इसी तरह शुरू हुई उनकी एशिया ट्यूशंस। आज इन क्लासेस में दूसरी कक्षा से लेकर छठी कक्षा तक के स्टूडेंट्स मुफ्त में ट्यूशंस लेते हैं।

बुक्स भी उपलब्ध करवाती हैं

इन क्लासेस में आने वाले बच्चों को हर सब्जेक्ट के होमवर्क से लेकर एक्जाम्स की तैयारी तक करवाई जाती है। उन्हें स्टेशनरी का सामान तथा रेफरेंस बुक्स भी उपलब्ध करवाई जाती है। पिछड़ों पर ध्यान

इंदु लेबर लॉ एंड पर्सनल लॉ की पढ़ाई कर चुकी हैं। अपने बच्चों की पढ़ाई में मदद करते हुए वे समझ पाती हैं कि कम पढ़े-लिखे या अनपढ़ मां-बाप को बच्चों को पढ़ाने में कितनी दिक्कत आती होगी। वे उन पर खास ध्यान देती हैं।

एक खास सोच

इन मुफ्त ट्यूशन क्लासेस को शुरू करने के पीछे इंदु की एक खास सोच है। वे कहती हैं- मेरे हिसाब से हर बच्चे में बेहद अच्छा प्रदर्शन करने की क्षमता छिपी है। उसे जरूरत है बस उचित मार्गदर्शन की। मैं बस यही करने की कोशिश कर रही हूं ताकि आने वाले समय में ये शिक्षित और आत्मनिर्भर बन सकें।

पैसा नहीं है लक्ष्य

फ्री कोचिंग क्लासेस चलाने वाली इंदु का कहना है कि उनका लक्ष्य पैसा कमाना नहीं है इसलिए वे इस काम में किसी से एक पैसे की मदद नहीं लेतीं। उनका लक्ष्य अपने समाज के आर्थिक रूप से पिछड़े बच्चों को शिक्षित बनाना है। बस वे इतनी उम्मीद करती हैं कि लोग अपने आसपास के गरीब बच्चों को पढ़ने-लिखने में मदद करें।

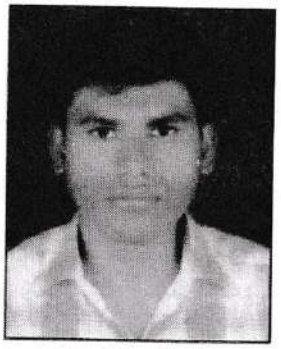

नितेश डोंगरे
बी.एड.

व्यक्तित्व का आभूषण है विनम्रता

विनम्रता मनुष्य के व्यक्तित्व का आभूषण है। इसके माध्यम से हमारी व्यक्तित्व खूबसूरत बनता है क्योंकि विनम्र होकर ही हम पात्रता अर्जित कर सकते हैं। विनम्र होकर हम ग्रहण करना सीखते हैं और विनम्रता के कारण ही हम दूसरों से जुड़ पाते हैं। भारतीय संस्कृति में इसी विनम्रता को व्यक्त करने के लिए प्रणाम व अभिवादन करने की परंपरा है। बड़ों के समक्ष झुककर आशीर्वाद लेने की प्रथा है। हमारे जीवन में विनम्रता बनी रहे इसलिए प्रार्थना, स्तुतियां आदि की जाती हैं, दूसरों की सेवा-सहायता व दान किया जाता है। इन सबसे हमारे मन का अहंकार गलता है, मन धुलता है और हम अधिक विनम्र और कृतज्ञ बनते हैं।

हमारे धर्मग्रंथों का एक मूलमंत्र हैं- जो नम्र होकर झुकते हैं वही ऊपर उठते हैं। विनम्रता न केवल हमारे व्यक्तित्व में निखार लाती है बल्कि कई बार सफलता का कारण भी बनती है। विनम्रता के कारण जो सम्मान मिलता है उसका एक अलग महत्व है। मन की कोमलता और व्यवहार में विनम्रता एक बड़ी शक्ति है। कोमलता सदा जीवित रहती है जबकि कठोरता का जल्दी ही विनाश हो जाता है। तलवार कठोर से कठोर पदार्थ को काट देती है लेकिन कई कोमल पदार्थों को काटने की ताकत उसमें नहीं होती। यह भी उक्सर देखा गया है कि कई लोग अपने विशेष कार्य में माहिर होते हैं लेकिन विनम्रता के अभाव में घर या कार्यालय में सदैव परेशानी का शिकार होते हैं। विनम्रता कायरता नहीं है, यह व्यक्ति को शांति, सहनशीलता, शक्ति और ऊर्जा प्रदान करती है। मनुष्य यदि विनम्रता से जीवन जीना सीख ले तो अनेक परेशानियां देखते ही देखते समाप्त हो जाती हैं। इनके लिए किसी विशेष उपाय की आवश्यकता नहीं है बल्कि थोड़ा सा व्यवहार में बदलाव लाने मात्र से ही यह संभव हो जाता है। विनम्र व्यक्ति के सामने कठोर हृदय वाले व्यक्ति को भी झुकना ही पड़ता है। विनम्रता से हम छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखकर अपने जीवन को खुशहाल बना सकते हैं। जो विनम्र होते हैं वे हर जगह सम्मान पाते हैं और दूसरों को जोड़ने का कार्य करते हैं। इसी संबंध में एक कथा याद आ रही है। महर्षि कणाद एक अपरिग्रही तपस्वी थे। उनकी दूर्धर्ष तपस्या के कारण समस्त भारतवर्ष में उनकी ख्याति थी। किसानों के खेत जोत लेने के बाद जो अन्न के दाने भूमि पर शेष रह जाते थे उन्हीं को खाकर वे अपना जीवन व्यतीत करते थे। अन्न के कणों पर जीवित रहने के कारण ही उनका नाम कणाद पड़ा था। उस राज्य के राजा को जब उनके इस महाव्रत का पता चला तो वह उनके मिलने पहुंचा। राजा के पास अनेक बहुमूल्य वस्तुएं थीं, उसने वे सब महर्षि कणाद के चरणों में रख दी। महर्षि बोले- राजन, ये सब ले जाओ। मेरे पास परमात्मा का दिया सबकुछ है। ये सब उन्हें दो जिनके पास इनकी कमी हो। राजा यह सुनकर बड़ा आश्चर्यचकित हुआ और उसने लौटकर यह बात अपनी पत्नी को बताई। राजा की पत्नी विदूषि महिला थी। वह राजा से बोली- महाराज, आज आपसे भूल हो गई। ऐसे महापुरुष के पास देने नहीं लेने जाया जाता है जिसे संसार की सांसारिकता से कोई मतलब नहीं वही सच्चा ज्ञान देने का अधिकारी हो सकता है।

अब राजा को अपनी भूल का भान हुआ। वह रानी के पास महर्षि के पास ज्ञानार्जन के भाव से पहुंचा। महर्षि कणाद बोले- राजन सच्चा वैभव सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति से नहीं आत्मसाक्षात्कार से आता है। उसे प्राप्त करने के बाद अन्य कोई उपक्रम मनुष्य के लिए शेष नहीं रह जाता। महर्षि की बात सुनकर राजा और रानी का जीवन बदल गया।

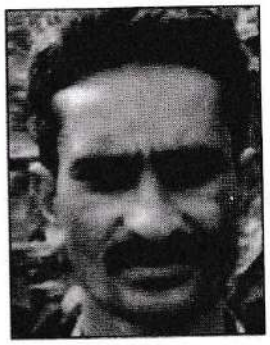

कुंदनलाल वर्मा
व्याख्याता

मानसिक समस्याओं से जूझता समाज

आज हमारे सामने एक बड़ी चुनौती व्यक्तियों में पनपती मानसिक व्याधियां हैं, जिनके समाधान पर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता है। दुनियाभर में 45 करोड़ से अधिक लोग मानसिक रोगों से त्रस्त हैं। आबादी के हिसाब से भारत दुनिया का दूसरा बड़ा देश है। ऐसे में जो मानव संसाधन देश के विकास में सहयोगी हो सकते थे वे मानसिक व्याधियों के कारण अपना कोई योगदान दे पाने की स्थिति में नहीं रह पाते हैं।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो साइंसेज बंगलुरू के अनुसार भारत में आज दो करोड़ से अधिक लोग गंभीर मानसिक बीमारियों से ग्रसित हैं। केवल इतना ही नहीं 5 करोड़ भारतीय अस्वस्थता से जूझ रहे हैं, जो गंभीर तो नहीं हैं पर आने वाले समय में भयावह रूप ले सकते हैं। इसके अलावा देश में ऐसे रोगियों की भी बड़ी संख्या है जिन्हें अस्पताल में भर्ती करने और सही इलाज मुहैया करवाने की आवश्यकता है। इन आंकड़ों के अनुसार भारत में 35 लाख से ज्यादा ऐसे मानसिक रोगी हैं जिन्हें तत्काल स्तरीय उपचार और भावनात्मक सहयोग की आवश्यकता है।

रांची इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइकिएट्री एंड एप्लॉयड साइंसेज द्वारा किए गए शोध के आंकड़े यह बताते हैं कि मानसिक बीमारियों का इलाज करवाने वालों में 30 फीसदी युवा हैं। नई पीढ़ी में पनपती अपरिमित महात्वाकांक्षाएं युवाओं को पहले तनाव फिर अवसाद और अंततः मनोरोगों की चपेट में ले लेती हैं। वे इस दौरान कई तरह के व्यसनों से भी घिर जाते हैं और तनावग्रस्त अनियमित जीवनशैली उन्हें भांति-भांति के मानसिक रोगों से घेर लेती है।

भारत में बढ़ती हुई मानसिक समस्याओं से जुड़े ये मामले ऐसे हैं जिन पर गंभीरता से ध्यान देने की जरूरत है। क्योंकि इनका असर हमारे पूरे सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक ढांचे पर पड़ता है। इसलिए मनोरोगियों की बढ़ती हुई यह संख्या देश के लिए एक बड़ी चुनौती है जिनके उपचार के लिए उपयुक्त साधनों व ऐसे उपायों को अपनाने की जरूरत है जिनसे मानसिक रोगियों का सरल ढंग से उपचार हो सके। देश की आधी आबादी समझी जाने वाली महिलाएं अक्सर अंदरूनी शारीरिक बदलावों और समस्याओं को लेकर भीतर ही भीतर जूझती रहती हैं। इस कारण शरीरिक व्याधियों के साथ ही उनका मानसिक स्वास्थ्य

बिगड़ने लगता है और यही कारण है कि मानसिक बीमारियों के मामले में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या दुगुनी है। यह विडंबना है कि घरेलू महिलाएं हों या कामकाजी महिलाएं इन दोनों में मानसिक तनाव व अवसाद अपने जड़ें जमा रहा है और इससे हमारा सामाजिक व पारिवारिक ढांचा बुरी तरह प्रभावित हो रहा है क्योंकि महिलाएं ही परिवार व समाज का मेरूदंड हैं। सन् 2012 में प्रस्तुत हुई एक रिपोर्ट के अनुसार भारत की महिलाओं की एक बड़ी जनसंख्या मानसिक विकारों से ग्रस्त है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हर पांच में से एक महिला और हर 12 में से एक पुरुष को किसी न किसी रूप में मानसिक व्याधि है। इस तरह हमारे देश में बहुत से लोग किसी न किसी तरह के मानसिक विकारों से जूझ रहे हैं और इनमें भी अनेक व्यक्ति गंभीर मानसिक रोगों से ग्रस्त हैं तथा उचित इलाज व देखभाल से वंचित हैं, ऐसे में सामान्य मानसिक विकारों के मामलों की बात ही क्या की जाए ? हमारे देश में मानसिक रोगियों के साथ अच्छा व्यवहार भी नहीं किया जाता है। शिक्षा, रोजगार और शादी ब्याह में मनोरोगियों की सामाजिक स्वीकार्यता एक बड़ा प्रश्न है। इसके साथ ही उन्हें हर स्तर पर भेदभाव का दंश भी झेलना होता है। देश में आज भी ऐसे लोग हैं जो परिवार में किसी सदस्य के मानसिक रूप से अस्वस्थ होने पर अंधविश्वासी टोटकों में फंस जाते हैं और इस तरह मानसिक रोगों से ग्रस्त व्यक्तियों को शारीरिक व मानसिक उत्पीड़न तो सहना ही पड़ती है साथ ही उनका आर्थिक शोषण भी होता है।

रचपालसिंह भंवर
बी.एड.

लालच नहीं करना चाहिए

एक गांव में दो भाई रहते थे। इनमें से बड़ा भाई अमीर था जबकि छोटा भाई गरीब था। जब दीपावली आई तो छोटा भाई बड़े भाई के यहां कुछ मांगने गया तो उसने उसको वहां से भगा दिया। छोटा भाई वहां से उदास होकर चला गया। रास्ते में उसे लकड़ी वाला बूढ़ा आदमी मिला। उसने छोटे से कहा- क्या हुआ भाई ? तुम ऐसे मुंह लटकाए क्यों घूम रहे हो ? दीपावली पर तो खुश रहना चाहिए। तभी छोटा भाई बोला- काहे की खुशी ताऊ, घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं है। तभी बूढ़ा व्यक्ति बोला बेटे अगर तुम मेरी लकड़ी का गट्ठा घर पहुंचा दो तो मैं तुम्हें एक ऐसी चीज दूंगा कि तुम अमीर हो जाओगे। छोटा भाई घर गया तो वहां उस व्यक्ति ने उसे एक मालकवा दिया और कहा कि तुम ये मालकवा लेकर जंगल में जाना। वहां तुम्हें अजीब तरह के तीन पेड़ दिखाई देंगे जिसके पास एक चट्टान होगी और ध्यान से देखोगे तो चट्टान के कोने में एक गुफा दिखाई देगी। तुम उस गुफा में चले जाना। वहां तीन गेंडे रहते हैं। वे तुम्हारे हाथ में मालकवा देखकर बहुत प्रसन्न होंगे और वे किसी भी कीमत में तुम्हें छोड़ेंगे नहीं क्योंकि उन्हें मालकवा बहुत पसंद है और तुम्हें कहेंगे लाओ तुम ये मालकवा हमें दे दो। जो चाहोगे वह तुम्हें मिलेगा लेकिन तुम उनसे धन नहीं मांगना। तुम कहना कि मुझे पत्थर की चक्की दे दो। छोटा भाई बूढ़े व्यक्ति से मालकवा लेकर सीधा गुफा में पहुंच गया। वहां उसे तीन गेंडे दिखे। वे बोले- लाओ ये मालकवा हमें दे दो। तुम्हें धन मिलेगा। तभी छोटा भाई बोला- मुझे धन नहीं चाहिए, पत्थर की चक्की चाहिए। गेंडे ने उसे पत्थर की चक्की दे दी और कहा कि तुम इसे मामूली चक्की मत समझना, जो मांगोगे वह मिलेगा परंतु जब इच्छा पूरी हो जाए तो इसे लाल कपड़े से ढंक देना, यह बंद हो जाएगी। छोटा भाई वहां से चक्की लेकर चला गया और उसने वैसा ही किया जैसा गेंडे ने कहा था और वह अमीर हो गया। बड़े भाई को विचार आया कि यह मुझसे ज्यादा अमीर कैसे हो गया ? जाकर देखूं तो सही। उसने वहां जाकर देखा कि छोटा भाई चक्की से अनाज और नमक निकाल रहा था तभी दूसरे दिन जब छोटा भाई अनाज बेचने बाजार गया तभी बड़ा भाई उसके घर से चक्की उठा ले गया और अपने परिवार को लेकर कहीं और चला गया। जब नाव से समुद्र पार कर रहे थे, नाव में वह चक्की रख दी। उस समय बड़े भाई से उसकी पत्नी बोली कि तुमने इस पत्थर की चक्की के लिए घर छोड़ दिया ?

उसी समय बड़े भाई ने चक्की से कहा कि चक्की नमक दे तो चक्की ने नमक दिया और नमक के भार से वह नाव डूब गई साथ ही उसका परिवार भी समुद्र में डूब गया। कहा जाता है कि तभी से समुद्र का पानी खारा है। इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि लालच नहीं करना चाहिए ।

संतोष पाटीदार
बी.एड.

शिक्षा का महत्व

शिक्षा का महत्व व्यक्ति के जीवन में सर्वाधिक होता है। हम यह कह सकते हैं कि मानव जीवन मिलने के उपरांत भी शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान है। शिक्षा मनुष्य के जीवन में पूर्णता लाती है और उसे आत्मविश्वास के साथ जीने और मेहनत से आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। परंतु क्या शिक्षा का सही अर्थ हम समझ पा रहे हैं ? क्या शिक्षा बस अच्छे स्कूल में पढ़ने और अच्छी नौकरी या व्यवसाय करने तक सीमित है ? क्या जो लोग अच्छे स्कूलों में नहीं जा पाते या अच्छी नौकरी या व्यवसाय नहीं कर पाते वे शिक्षित नहीं हैं ? हमें ऐसे कई सवालों के जवाब जानने होंगे। आज के आधुनिक युग में जहां व्यक्ति के पास अच्छे और बुरे को समझने का वक्त नहीं है जहां व्यक्ति प्रसिद्धि और प्रसाधन प्राप्त करने हेतु किसी भी हद तक जा सकता हो ऐसे में हमें शिक्षा के वृहद रूप को समझने की आवश्यकता है। हमें यह जानना होगा कि शिक्षा केवल व्यक्ति को कमाने का हूनर ही नहीं देती वरन यह व्यक्ति को सुखी जीवन जीने की कला भी सिखाती है। शिक्षा व्यक्ति को चतुर और बेईमान नहीं बल्कि अटल और ईमानदार बनाने के लिए दी जानी चाहिए। शिक्षा मनुष्य को कमजोर और संकीर्ण नहीं बल्कि आत्मनिर्भर और साहसी बनाने हेतु दी जानी चाहिए। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति की व्यावहारिकता और तर्कशक्ति प्रदान करना होता है। आज ज्यादातर विद्यार्थी और अभिभावक केवल अच्छे परिणाम लाने को शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य मानने लगे हैं। कुछ लोग तो बच्चों के खेलकूद और दूसरी गतिविधियों से दूर रखकर केवल किताबी कीड़े बनाने में विश्वास रखते हैं परंतु आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में बच्चे तभी आगे बढ़ सकते हैं जब वे हर क्षेत्र में अपनी योग्यता को साबित करें। आज बच्चों को मानसिक रूप से दृढ़ बने रहने के लिए प्रेरित करना अतिआवश्यक है ताकि वे जीवन के उतार-चढ़ाव में अपने आपको संभाल सकें और अपने सपने साकार कर सकें।

विष्णुराम भगोरिया

अब आएगा वाईफाई का मजा

अब आप चाहें तो वाईफाई का अलग-अलग तरह से इस्तेमाल करके अपने कई काम बहुत आसान बना सकते हैं। वाईफाई का अनोखा विज्ञान है। आप अपने वाईफाई कवरेज में ब्लैंक स्पॉट को एकदम सही कारण पता ही नहीं कर सकते लेकिन आप चाहें तो राउटर प्लेसमेंट के बारे में दिशा-निर्देशों का पालन कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर राउटर को घर के सेंटर में रखें। छह फिट या इससे ज्यादा ऊंचाई पर रखने से बेहतर कवरेज मिलेगा। इसका कारण है कि वाईफाई के सिग्नल ओमनी डाइरेक्शन में होते हैं और इनकी प्रवृत्ति ऊपर की बजाय नीचे की होती है। अगर आपके राउटर में ड्यूएल एंटेना है तो एक को वर्टिकल और दूसरे को होरीजेंटल रखने से अलग-अलग डिवाइसेस के लिए बेहतर कवरेज मिल सकता है। अगर आप चाहें तो रेंज बढ़ाने के लिए पुराने राउटर को वाईफाई सिग्नल रिपिटर्स में भी बदला जा सकता है। आप डी-लिंक और नेटगिअर जैसे ब्रांड्स से छोटे रिपिटर्स भी खरीद सकते हैं। ये सीधे ही इलेक्ट्रिकल आउटलेट में प्लग होते हैं। इनकी कीमत 15 सौ रुपए से शुरू होती है। रिपिटर्स को अपने मौजूदा नेटवर्क के पास ही रखना चाहिए ताकि यह सिग्नल को फॉरवर्ड कर सके। इसका सेटअप आसान है। ये सब इजी सेटअप विजॉर्ड के साथ आते हैं। आपको रिपिटर मोड सिलेक्ट करना है। वाईफाई का नाम और पासवर्ड एंटर करना है और बाकी काम अपने आप हो जाएगा। आप वाईफाई की रेंज को दो या तीन गुना तक बढ़ाने के लिए और रिपिटर्स जोड़ सकते हैं।

वायरलैस प्रिंटर और ड्राइव

शेअरिंग के लिए वाईफाई अच्छा साधन है। अगर आपके पास साधारण प्रिंटर या एक्सटर्नल हार्ड ड्राइव है तो बिल्ट इन यूएसबी पोर्ट और प्रिंट सर्वर वाला राउटर लें। उदाहरण के तौर पर बेल्किन का प्लेमैक्स एन600 (कीमत लगभग 8000 रु) एक वाईफाई सर्टिफाइड राउटर है जो ड्यूएल एसबी पोर्ट के साथ आता है। पारंपरिक वायरलैस राउटर की तरह इस्तेमाल करने के अलावा आप इससे यूएसबी हार्ड ड्राइव और यूएसबी प्रिंटर कनेक्ट कर सकते हैं। इसका मतलब है कि आप घर में एक ही नेटवर्क पर किसी भी कम्प्यूटर से कहीं से भी प्रिंट दे सकते हैं। इसके अलावा आप हार्ड ड्राइव पर स्टोर कंटैंट भी एक्सिस कर सकते हैं।

प्रवेश मालवीया
बी.एड.

शिक्षा, समाज व नैतिकता

व्यक्ति आज नैतिक शिक्षा के अभाव के कारण विभिन्न अपराधों में फंसता जा रहा है। व्यक्ति का दृष्टिकोण बदलता जा रहा है। दूसरों की पीड़ा का स्वयं में अनुभव का तो प्रश्न ही नहीं उठता। नैतिक शिक्षा के अभाव में व्यक्ति विभिन्न मानसिक रोगों से ग्रस्त हो रहा है। उसमें अहं भावों ने घर कर लिया है। प्रतिदिन के झगड़े व अन्य विवाद इसी के परिणाम स्वरूप हैं। यदि आज आधुनिक युग की बदलती परिस्थितियों में नैतिक शिक्षा द्वारा मानव मात्र की विचारधारा में परिवर्तन नहीं लाया गया तो वह दिन दूर नहीं है जब भारतीय संस्कृति के गीत गाने वाले संपूर्ण संसार की दृष्टि में भारतवर्ष के प्रति कोई आस्था नहीं रह जाएगी और संसार के मानचित्र में भारतवर्ष भी अन्य देशों की भांति भौतिक पतन की सीमाओं के क्रम में आ जाएगा। नैतिक मूल्यों के अभाव के कारण ही चारों ओर हाहाकार, युद्ध तथा मारकाट हो रही है। आदमी आदमी का वध करने में हिचकिचाता नहीं है। नैतिक एवं मूल्यों की शिक्षा पर बल देते हुए सन् 1959 में आजाद स्मृति व्याख्यान देते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि क्या हम विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति के साथ मानसिक, आध्यात्मिक प्रगति को जोड़ सकते हैं? भारतीय जीवन मूल्यों एवं नैतिकता के सिद्धांतों पर आधारित चिंतन है अतः नैतिकता के गुणों के विकास के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने आचरण में परिवर्तन करें। हम चाहे कितने भी उपदेश दें या सुनें, अनेक पूजा स्थलों पर शीश झुका लें इससे कुछ नहीं होता। मंदिर के दर्शन एवं गीता का श्रवण हमारे पापों का विमोचन नहीं कर सकता। गीता व अन्य ग्रंथों में लिखित जीवन-मूल्य परख बातों को व्यावहारिक बनाकर अपने आचरण को शुद्ध बनाकर हम नैतिक बन सकते हैं। नैतिकता वह जीवन मूल्य है जो समाज में ही उपजता है। समाज में रहते हुए ही विकसित होता है। यदि कोई व्यक्ति हिमालय में जाकर समाज से दूर जाकर या समाज से दूर अकेला रहता है तो उसके आचरण का क्या पता चलेगा? यह तो तभी जान सकते हैं जब व्यक्ति समाज में रहकर अन्य लोगों के साथ व्यवहार करता है। पंडित पद्मभूषण मदनमोहन मालवीय के अनुसार छात्र के जीवन में ज्ञान के विकास की अपेक्षा नैतिकता एवं सदाचारिता की प्रतिष्ठा अधिक महत्वपूर्ण होती है। ज्ञान से सदाचार प्राप्त हो सकता है यह मात्र भ्रम है। नैतिकता एवं सदाचार के अभाव में विद्या का विकास नहीं हो सकता परंतु सदाचार का सहारा पाकर विद्या का विकास हो सकता है। ज्ञान की प्राप्ति जीवनभर होती है परंतु सदाचार की नीव जीवन के प्रारंभकाल में ही बनते हैं। आज हमारे समाज में उत्तरोत्तर नैतिक पतन होता जा रहा है। भौतिक जीवन को महत्ता देने वाले अपने निहित स्वार्थों का दौड़ में अपने कर्तव्यों, सिद्धांतों तथा आदर्शों से विमुख हो चुके हैं। सामाजिक व्यवहार और व्यापार में बालकों को नैतिकता ही अधिक देखने को मिलती है। शिक्षालयों में इसका प्रभाव बढ़ रहा है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली ज्ञान तक ही सीमित है और उसमें भी परिणाम का आग्रह बहुत है। विद्यार्थियों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता, उद्दंडता, अश्रद्धा और कर्तव्यहीनता की भावना इसी का परिणाम है। फुटपाथ पर बिकने वाला

अश्रद्धा और कर्तव्यहीनता की भावना इसी का परिणाम है। फुटपाथ पर बिकने वाला सस्ता साहित्य, सिनेमा के नग्नचित्र, क्लब-कैबरे डांस, मदपान तथा यौनाचार की उन्मुक्तता का दृष्टिकोण सामाजिक दुराचार और अनैतिकता को आश्रय दे रहा है। घर-घर में लगे टीवी द्वारा दूरदर्शन पर आने वाले अनर्गल तथा नैतिकता को गिराने वाले कार्यक्रमों से बालकों का निर्मल मस्तिष्क विकृत हो रहा है। अभिभावक ध्यानविमुख हैं। पश्चिमी संस्कृति का ऊपरी आकर्षण मृगतृष्णा सा हमें लुभा रहा है। इस प्रवाह में विद्यार्थी ही नहीं वरन हमारा समाज और शासन भी बह रहा है। अपनी भारतीय संस्कृति से विमुख होकर हम संसार में अपना गौरव खो रहे हैं। शिक्षा मानव के विकास की कुंजी है। शिक्षा बालक के जन्मजात प्रवृत्तियों का विकास करती है। शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास की कुंजी है जो शिक्षा विकास में नैतिक गुणों का विकास करती है। नैतिक गुणों से अलंकृत व्यक्ति हमेशा नम्र, उदार, सहिष्णु, सच्चरित्र, कर्तव्यनिष्ठ तथा सेवापरायण होता है। वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे। नैतिक शिक्षा देश और समाज की रीढ़ है। जिस प्रकार विकृत रीढ़ से एक व्यक्ति स्वस्थ नहीं होता उसी प्रकार विकृत शिक्षा व्यवस्था से देश का निर्माण नहीं हो सकता। आज नैतिक चरित्र का अभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। इसका कारण है शिक्षा में मूल्य शिक्षा का अभाव तथा कंजूसी। नैतिक शिक्षा द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। शिक्षा का मनुष्य को देवत्व प्रदान करती है। नैतिक शिक्षा मनुष्य को राष्ट्रीय विचारधारा से जोड़कर संपूर्ण नागरिक बनाती है।

आज के संदर्भ में नैतिक स्वरूप में पुनरुद्धार की महति आवश्यकता है। आज की शिक्षा हमें योग्य नागरिक नहीं बना पा रही है। भ्रष्टाचार दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। कुकर्मों की संख्या बढ़ती जा रही है। नारी के सम्मान की अवहेलना प्रतिदिन हो रही है। छोटी-छोटी बालिकाएं भी आज सुरक्षित नहीं हैं। चोरी-डकैती, सामूहिक बलात्कार जैसे कुकर्म सामने आ रहे हैं। आज आदर्शों का ह्रास हो रहा है। नैतिकता क्षीण होती जा रही है। ऐसी स्थिति में आधुनिक वातावरण में नैतिक तथा मूल्य शिक्षा अधिक उपदेय प्रतीत होती है। अपराधों का अंत करने के लिए, समाज में परिवर्तन लाने के लिए नैतिक एवं मूल्यों की शिक्षा की भी आवश्यकता है। प्राचीन काल में गुरु को ही सबकुछ माना जाता था क्योंकि गुरु के द्वारा ही हमें ईश्वन का ज्ञान होता है परंतु आज तक देखते हैं कि गुरु और शिष्य का संबंध करीब-करीब समाप्त होता जा रहा है। आज छात्र केवल विद्यालय एक बहाने मात्र को ही जाते हैं। अध्यापकों के समीप जाकर उनके गुणों को परख नहीं पाते हैं। इस प्रकार छात्र अध्यापकों के नैतिक मूल्यों से कोई लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। अतः छात्र और अध्यापक के संबंधों में घनिष्ठता बनाने के लिए ध्यान देना भी आवश्यक है।

शिवानी सोनी

युवा शक्ति

युवा शक्ति देश की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है और देश के विकास में सहायक बन सकती है। युवावस्था सागर की उठती लहरों की गर्जना सी है। यदि आज का युवा अपनी शक्ति को पहचान ले और कठिनाइयों से सामना करने का अपना लक्ष्य बना ले तथा विफलता मिलने पर भी दुगुनी शक्ति से कार्य करे क्योंकि पर्वतों के विशाल शिखरों के समान है। फिर भी पर्वत पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और कितनी भी आंधी-तूफान आए वह उसे हिला नहीं पाते हैं। आज का युवा अपनी इस शक्ति को पहचान ले तथा इसके साथ ही साथ अपने अंदर सहनशीलता और दृढ़ता के गुणों का विकास कर ले तो ऐसे युवा सारी कठिनाइयों को पार करते हुए आगे बढ़ते ही जाते हैं और सफलता को प्राप्त करते हैं। सिर्फ आवश्यकता है युवा द्वारा अपनी शक्ति को पहचानने की। जिस दिन आज का युवा इस शक्ति को पहचान लेगा उस दिन उसे कोई प्रगति से रोक नहीं सकता। आज के युवा से मेरा यही आग्रह है कि वह अपनी इस शक्ति को पहचाने तथा अपनी एवं देश की प्रगति में सहायक बने।

शक्ति बार्चे
कम्प्यूटर ऑपरेटर

उपासना-साधना

ईश्वर की उपासना का अर्थ है कि हम उसके दिव्य गुणों को अपने में धारण करें। इसी प्रकार ऋषियों ने पूजन कार्य में ऐसे प्रतीकों का प्रावधान किया है जो साधक को जीवन संदेश भी देते हैं। कुछ प्रमुख पूजन प्रतीकों के अर्थ निम्नवत हैं। आचमन : आचमन में तीन बार जल को ग्रहण किया जाता है। यह जल वस्तुत: मन, वचन और कर्म की पवित्रता का प्रतीक है। रक्षा-सूत्र : रक्षासूत्र संकल्पित होने का प्रतीक है। यह उच्च जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए व्रतशील एवं उत्तरदायित्वभरा जीवन जीने की प्रेरणा देता है। रक्षाबंधन पर जब बहनें अपने भाइयों के हाथ में रक्षा के धागे बांधती हैं तब भाई उनकी सदैव रक्षा करने के लिए संकल्पित होते हैं।

चंदन : चंदन शांति एवं शीतलता का प्रतीक है। भले ही विषधर इसे घेरे हो पर इसका वृक्ष अपनी शीतलता का त्याग नहीं करता। इसकी छाया में बैठने वाले सुगंधभरी शीतलता प्राप्त करते हैं। नष्ट होते-होते भी चंदन अपने लकड़ी से जप करने की पवित्र माला और हवन सामग्री का चंदन दे जाता है। उपासना के वक्त इसे मस्तक पर धारण करने का अर्थ यह है कि विपरीत परिस्थितियों में भी विवेक नहीं खोएं।

ममता बिरले
बी.एड.

शिक्षा बिना जीवन अधूरा

प्राचीन काल से ही शिक्षा का महत्व रहा है। लोग अपने बच्चों को पढ़ने के लिए गुरुकुल भेजते रहे हैं। लोग यह सोचकर बच्चों को गुरुकुल भेजते रहे हैं कि वहां रहकर बच्चा अच्छे संस्कार सीखेगा एवं बड़ों का आदर करेगा। बिना गुरु मनुष्य का जीवन अधूरा है। चाहे राम हों या कृष्ण, बलराम हों या सुदामा, फिर कौरव हों या पांडव सबने जो कुछ भी जीवन में प्राप्त किया वह अपने गुरुओं के मार्गदर्शन से ही हासिल किया। गुरु का स्थान संसार में बहुत ऊंचा है। जैसे कुम्हार गीली मिट्टी से चॉक पर विभिन्न पर सुघड़, सुंदर वस्तुएं बनाकर संसार को उपलब्ध करवाता है उसी प्रकार गुरु भी शिष्यों में अच्छे संस्कार डालने का कार्य करते हैं, जिससे कि बालक जीवन में उन्नति करे व अपने व गुरु के नाम को रोशन करे। समय की धारा के साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी परिवर्तन की हवा चली। आधुनिक व रोजगारमूलक शिक्षा का चलन शुरू हुआ। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ. भीमराव अंबेडकर, अमर्त्य सेन, डॉ. अब्दुल कलाम आजाद, डॉ. मदनमोहन मालवीय, जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल आदि आधुनिक व बुनियादी शिक्षा पद्धति की देन हैं जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में काफी नाम कमाया वो भी अपनी शिक्षा के बल पर। कई प्रसिद्ध लोगों ने अपनी शिक्षा बड़ी कठिन परिस्थितियों में प्राप्त की व संघर्षों को अपना साथी बनाकर शिक्षारूपी अश्व को अपने काबू में कर संसार में नाम कमाया। समय की धारा के साथ शिक्षा अब अत्याधुनिक पद्धतियों से लैस हो गई है। आधुनिक टेक्नॉलॉजी के माध्यम से शिक्षा के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ा। आज हर कोई अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए प्रयासरत रहता है।

ज्योति कर्मा
बी.एड.

ऐसा गांव बनाएं

आओ मिलकर हम गांवों को सुंदर-साफ बनाएं।
मेहनत करके इस धरती पर स्वर्गलोक ले आएं।।

हरी-भरी हो सुंदर धरती, पढ़े-लिखे हों लोग,
अन्न उगाएं करें धरती का हम सुंदर उपयोग।।
तालाबों को सदा बचाएं, पौधे खूब लगाएं,
आओ.....

रखें सफाई जगह-जगह पर, रहे न कूड़ा-करकट,
अगर गंदगी दिखे कहीं तो साफ करें हम झटपट।।
निर्मल गांव कौन अपनाए, सबको हम समझाएं
आओ.....

दारू भट्टी खुले कभी ना, इसका रखें ध्यान,
मिलजुलकर आपस में रहना, सीखे हर इंसान।
हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई सबको गले लगाएं
आओ.....

नए-ना औजारों से हम खेती करना सीखें,
नया जमाना है तो भाई, हम भी वैसा दिखें।
फर्ज हमारा लड़का-लड़की सबको सदा पढ़ाएं
आओ.....

बचे गांव की कला हमारी, ऐसा करें विकास,
गंदी बातें कभी न फटकें, भले जनों के पास।
दूर-दूर तक चर्चा हो, ऐसा इतिहास रचाएं
आओ मिलकर हम गांवों को सुंदर साफ बनाएं।

नाईदा पठान
बी.एड.

मां

'मां' इस एक अक्षर में विश्व की संपूर्ण ममता, स्नेह, वात्सल्य समाया हुआ है। एक बार ईश्वर ने सोचा कि जब तक वह हर जगह मौजूद नहीं रह सकता तब तक के लिए कोई ऐसी चीज बनाई जाए जो उसके समरूप हो तब उन्होंने मां बनाई। इस संसार में दो लोगों के पास ही सृजन शक्ति है। एक है ईश्वर और दूसरी है मां। मां अपने पास प्यार के अथाह समंदर को छुपा कर रखती है। लेकिन मां के प्यार को अभिव्यक्त करने के लिए या उनके प्रति आभार मानने के लिए वर्ष में एक ही दिन क्यों चुना जाए ? किसी मौके या विशेष दिन का ही इंतजार क्यों किया जाए ? बल्कि होना तो यह चाहिए कि जिंदगी का एक-एक पल, एक-एक लम्हा मां के प्यार में भीगा हुआ है। हमारे जीवन की एक-एक सांस में मां का ही तो प्यार समाया हुआ है। जिस वायुमंडल में हम सांस लेते हैं उसमें भी मां का ही प्यार घुला हुआ है। मां के प्यार को क्या कभी कोई शब्द भी परिभाषित कर पाए हैं ? मां ने हमें जन्म दिया, सांसें दीं, नौ महीने अपनी कोख में रखकर अपने खून से सींचा। दुनिया में कदम रखते ही पहला कदम मां ने ही चलना सिखाया और फिर उसके बाद कदम दर कदम आगे बढ़ना सिखाया। लड़खड़ाकर जब हम गिरते तो संभलना और संभलकर फिर चलना भी तो मां ने ही सिखाया है। मां ने जन्म देने के अलावा संस्कार भी दिए हैं। दुनिया में अगर कहीं स्वर्ग है तो वह बस मां के चरणों में ही है। संस्कारों के साथ ही मां जीवन की पहली शिक्षा भी देती है। हर उस मां को शत-शत नमन जिन्होंने हमें हर रिश्ते को ईमानदारी से निभाने की प्रेरणा दी। आपने मुझे भी एक अच्छी बेटी बनने के संस्कार तो दिए ही साथ ही आपने ही मुझे सीख दी कि एक अच्छी पत्नी और मां कैसे बना जाता है।

हमारे जीवन के सफर के हर कदम पर मौजूद रहता है मां का प्यार। जहां मां हमारे दुखों को बांटकर आधा कर देती हैं वहीं हमारी खुशियों में शामिल होकर उसे द्विगुणित भी कर देती हैं। मां का और हमारा नाता ऐसा है कि जब हम दुखी होते हैं तो आंख से आंसू उसके आते हैं और जब हम खुश होते हैं तो होंठों उसके मुस्कुराते हैं। मां हमारे लिए एक विशाल घने छायादार वटवृक्ष की तरह होती है जो उसकी शाखाओं को फैलाकर हमें संरक्षण प्रदान करती है। मां का स्नेहिल स्पर्श हमें हमारे दुखों और तकलीफों से दूर ले जाता है। आपके आशीष वचन की बयार हमारे अंतर्मन तक को भिगो कर हमारे जीवन की राह से दुख के हर कांटे को दूर करती है। मां ने हमें इस जीवन में आने का मौका तो दिया ही साथ ही अच्छे संस्कार और शिक्षा देकर एक महान इंसान बनने का सौभाग्य भी दिया। मां के अमूल्य स्नेह, ममत्व, वात्सल्य हमें जीवन की आखिरी सांस तक ऋणी बनाते हैं, एक ऐसा ऋण जिसे कभी कोई नहीं उतार सकता।

पुलक जटाले
बी.एड.

रुकना नहीं

रुकना नहीं, झुकना नहीं चलना हमारा काम है
बच्चे भले ही हैं मगर साहस हमारा नाम है।
बनकर उजालों की किरण
पल-पल अंधेरों से लड़ें
हम ठान लें इक बार वो
फिर पांव मंजिल तक बढ़ें।
जुटते लगन के साथ हम हमको कहां आराम है
बनकर भारत हिम्मत दिखा
हम दांत सिंहों के गिने
गोविंद के बस लाड़ले
जाते दीवारों में चुनें।
हम ही भरत, हम ही लखन, हम में उभरता राम है
हम जागरण के मंत्र हैं
हम चुप्पियों के शोर हैं
हम हर कहीं हैं एक से
हम एकता की डोर हैं।
हम प्यार के पंछी सरल, अपनी कथा अभिराम है
हम एक पूरा राष्ट्र हैं
कल की सुनहरी राह हैं
हम पर ठहरकर ध्यान दो
हम सब तुम्हारी चाह हैं।
टूटे नहीं छूटे नहीं ये भी बड़ा एक काम है।

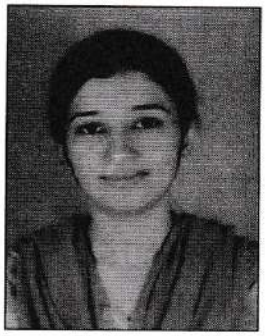

प्रिया शुक्ला
बी.एड.

नारी की मौलिकता बनी रहनी चाहिए

सीएस जोड ने अपने संस्मरण में एक विलक्षण बात कही है। उन्होंने कहा है कि जब वे पैदा हुए थे, बालक थे तो उनके देश में घर थे पर अब जब बूढ़े हो रहे हैं तो घर की जगह मकान शेष रह गए हैं। वे कहते हैं कि घर और मकान में यदि कोई अंतर है तो वह अंतर पूरी तरह नारी के ऊपर है। नारी में यह सामर्थ्य है कि वह किसी मकान को घर में परिवर्तित कर दे पर यदि स्त्री नर जैसी ही हो जाती है तो घर में मात्र मकान बच जाता है। घर विनिर्मित ही नहीं हो पाता। साथ रहने वाले दो सदस्य होते हैं पर वे पति-पत्नी नहीं होते। बच्चे जन्म जरूर लेते हैं पर संबंध नारी और बच्चे का होता है। मां-बेटे तादात्म्य कभी पनप ही नहीं पाता। ऐसा इसलिए कि जो स्त्री मां बन सकती है, परिवार को स्नेह सूत्र में बांध सकती है वह तो विकसित हुई नहीं उसकी जगह पुरुषप्रधान नारी बन गई। यही गड़बड़ी हुई। शायद यह प्रतिद्वंद्विता अभी समाप्त हुई नहीं है। पोशाख को ही लें तो देखेंगे कि उसमें भी यह होड़ चल रही है कि लड़कियां पुरुषों जैसे चुस्त वस्त्र पहनने लगी हैं। यहां फिर एक बार गलती हो रही है। वास्तव में चुस्त कपड़े लड़ने की प्रवृत्ति पैदा करते हैं। जबकि ढीले वस्त्र शांत रहने के लिए, शालीन बने रहने के लिए, मौन रहने के लिए प्रेरित करते हैं। इसलिए पूर्वी देशों में ढीले कपड़े पहनने का प्रचलन रहा है जबकि पाश्चात्य लोग कसे वस्त्र पहनते रहे हैं। इतना ही नहीं संसार में धार्मिक लोगों के किसी भी पंथ में अब तक चुस्त कपड़े नहीं पहने गए। यह अकारण नहीं था। ढीले लिबास व्यक्तित्व को एक शिथिलता और शांति प्रदान करते हैं। हम जो कुछ भी खाते-पीते हैं, पहनते-ओढ़ते हैं उनका शरीर, मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बाद में यही प्रभाव व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है। इसलिए इस संबंध में सदा सतर्क रहने की आवश्यकता है कि हम क्या कुछ कर रहे हैं एवं कैसा आवरण आच्छादन शरीर के लिए अपना रहे हैं। यह सबकुछ मनुष्य को प्रभावित करते हैं। इस संदर्भ में ध्यान देने योग्य बात यह है कि परिवार को विश्रंखलित न होने देने में महिलाएं यदि अग्रणी भूमिका निभा पाती हैं तो

इसका एकमात्र कारण उसकी विशिष्ट मानसिक संरचना ही है। पुरुषों में चूंकि इसका अभाव होता है फलस्वरूप न तो वे बिखराव को रोक पाते हैं और न सद्भावनापूर्ण स्वर्गीय वातावरण बनाए रख सकने में ही सफल होते हैं। पुरुष की इस असफलता के लिए जिम्मेदार उसकी मानसिक बनावट ही है जो महिलाओं की स्थिति में तो कुछ प्रकृति प्रदत्त होती है और शेष भाग का निर्माण उसकी दैनिक गतिविधियों और रहन-सहन पर निर्भर है। परिधान की भी उसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका है। तथ्य के विपरीत यदि वे प्रकृतिविरुद्ध क्रियाप्रणाली अपनाने लगे तो संभव है कि उक्त व्यवस्था में व्यवधान पैदा हो जाए और संरचना के बदलने से शांति नष्ट होने लगे। पश्चिम में इस कारण परिवार टूटते चले जा रहे हैं। भारत में टूटने की गति धीमी है। इसके कारण आर्थिक कारण उतने ही नहीं जितनी नकल की प्रवृत्ति और पुरुष मानसिकता में स्त्रियों का ढलते जाना है। इतना सब जान समझ लेने के उपरांत अब इस बात का आग्रह करने जैसा कुछ शेष रह नहीं जाता कि नारी को पुरुष जैसा नहीं बन जाना चाहिए। कालचक्र अब इसके विपरीत बनने जा रहा है जिसमें समाज को मातृसत्ता के नेतृत्व की आवश्यकता पड़ेगी। हमें इसी दिशा में सोचना और स्वयं को गढ़ना चाहिए तभी इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य का सपना साकार हो सकेगा। नारी जन्मदात्री है। समाज का प्रत्येक भावी सदस्य उसकी गोद में पलकर संसार में खड़ा होता है। उसके स्तन का अमृत पीकर पुष्ट होता है। उसकी हंसी से हंसना और उसकी वाणी से बोलना सीखता है। उसकी कृपा से ही जीकर और उसके अच्छे-बुरे संस्कार लेकर अपने जीवन क्षेत्र में उतरता है। तात्पर्य यह है कि जैसी मां होगी संतान अधिकांशतः उसी प्रकार की होगी।

तृप्ति मिश्रा
बी.एड.

दोस्त

न कोई खत न तार आया

जो सोचा नहीं था पैगाम आया

दोस्त ने क्यों भुला दी हमारी दोस्ती

न कोई नमस्ते सलाम आया।

दोस्ती तो होती है प्यार का बंधन

हमने हमेशा किया इसका अभिनंदन

न समझ पाया मेरा दोस्त ये बंधन

हमने निभाया हमेशा ये गठबंधन।

दोस्ती होती है प्यार का एहसास

कुछ दिल के दूर कुछ दिल के पास।

तुम समझ जाना ये अहसास

न समझे तो हम लेंगे आखिरी सांस

सबसे प्यारा होता है दोस्त

जो हर कदम साथ देता है

कभी जिंदगी का रास्ता

तो कभी मुकाम होता है।

ज्योति कर्मा
बी.एड.

बेटी बचाओ

ठुमक-ठुमक गाने दो मुझको,
यूं मत मर जाने दो मुझको।
जीवनभर आभार करूंगी,
मां, मैं तुमसे प्यार करूंगी।

मैं भी तो हूं अंश तुम्हारा,
मैं भी तो हूं वंश तुम्हारा।
पापा को समझाकर देखो,
सारी बात बताकर देखो।

बिगड़ी है अनुपात बताओ,
क्या होंगे हालात बताओ।
फिर भी अगर न माने पापा,
रोऊंगी मनुहार करूंगी।

जीवनभर आभार करूंगी,
मुझे जन्म दो, मुझे जन्म दो।
लक्ष्मीबाई मदर टेरेसा,
क्या कोई बन पाया वैसा।

ये बातें बतलाओ अम्मा,
दादी को समझाओ अम्मा।
सब गुण अंगीकार करूंगी,
मुझे जन्म दो, मुझे जन्म दो।

रिंकू राठौर

भ्रूण हत्या

तेरी सांसों के बीच सांस लेती हुई
मैं हूं एक नन्हीं सी जान मां।
तेरी निगाहों में, मैं न सही,
पर तेरी कोख की हूं मैं शान मां
तू मुझे नहीं देख सकती तो महसूस कर
आखिर मैं हूं तेरी, मां
आने दे मुझे इस जहां में
ताउम्र मानूंगी तेरा अहसान मां
कर आजाद मुझे इस बंधन से
बन सकती हूं मैं तेरी शान मां
बनी रहने दे अपनी कोख में
मुझे नौ महीने की मेहमान मां
नहीं करूंगी खाती हूं कसम
तुझे मैं परेशान मां
लड़की हूं पर हूं तो इंसान मां
भ्रूण हत्या पाप है
इस सच को तू पहचान मां
मुझे एक बार जमीं पर आने दे
चूमूंगी मैं भी आसमान मां
लड़की हूं तो क्या हुआ
तुझे करा दूंगी मैं लड़के का भान मां
तेरी सांसों के बीच सांस लेती हुई
मैं हूं एक नन्हीं सी जान मां

सविता यादव
बी.एड.

बेटियां

बोए जाते हैं बेटियां
उग आती हैं बेटियां
खाद-पानी बेटों में
पर लहलहाती हैं बेटियां
रुलाते हैं बेटे,
पर रोती हैं बेटियां
एवरेस्ट पर ठेले जाते हैं बेटे
पर चढ़ जाती हैं बेटियां
साथ छोड़ देते बेटे
पर साथ निभाती हैं बेटियां
कई तरह से गिराते हैं बेटे
पर संभाल लेती हैं बेटियां
पढ़ाई करते हैं बेटे
पर प्रथम आती हैं बेटियां
काम बिगाड़ते हैं बेटे
पर काम संवारती हैं बेटियां
घर का नाम डुबाते हैं बेटे
पर जग में नाम रोशन करती हैं बेटियां
कुछ भी कहें पर
बेटों से अच्छी होती हैं बेटियां

गिरिजा यादव
व्याख्याता

गरीब कौन?

एक धनवान को अपने पैसों पर बड़ा घमंड था। उसने अपने परिवार वालों के लिए दुनियाभर की सुविधाएं जुटा रखी थीं। उसके घर में वह सबकुछ था जो आरामतलब जिंदगी के लिए आवश्यक होता है। वह अमीर आदमी चाहता था कि उसने जो सुविधाएं अपने परिवार वालों को दी हैं उसके लिए सब उसकी तारीफ करें, एहसान मानें। लेकिन उस अमीर का बेटा पिता के पैसों का महत्व नहीं समझता था। अमीर आदमी ने सोचा कि जब तक उसका बेटा गरीबी को नहीं देख लेगा तब तक वह पैसों का महत्व नहीं समझेगा। एक दिन पिता अपने बेटे को गांव की कुदरत को करीब से दिखाने के लिए उसे एक ग्रामीण के घर ले गए। वह ग्रामीण एक जमाने में उनका कर्जदार हुआ करता था। उसने उनकी खूब आवभगत की। बेटा अपने पिता के साथ सारा दिन गांव में घूमता रहा। रात हो गई। पिता ने बेटे से पूछा कि कैसा लग रहा है ? बेटे ने कहा बहुत अच्छा। पिता ने कहा कि तुमने देखा कि गरीब कितनी मुश्किल से गुजर-बसर करते हैं तो बेटा इससे तुम्हें क्या सीख मिलती है ?

बेटे ने उत्तर दिया- पिताजी मैंने देखा कि हमारे घर में एक छोटा सा स्विमिंग पूल है पर उनके पास तो एक पूरा तालाब है। हमारे बगीचे में बिजली के लैंप लगे हैं लेकिन उनके आंगन के ऊपर तो लाखों तारे टिमटिमा रहे हैं। मैंने उनके घर पाचक गोलियां नहीं देखी पर हमारे घर में पूरा दवाखाना है। हम अपने घर तक सीमित हैं परंतु उनके लिए सारी दुनिया खुली है। बेटे ने कहा मुझे यह दिखाने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद पिताजी, वाकई हम कितने गरीब हैं। इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने पैसों पर कभी घमंड नहीं करना चाहिए।

WHY NOT A GIRL

People pray for a baby,
They desire a boy,
Not a girl, Why?

Blessings of elders are for male ,
Not for the females,
They loves boy,
Not a girl,
Why??

But when they need wealth ,
They pray to goddess Laxmi,
When they need courage,
They pray to goddess durga,
When they desire knowledge,
They pray to goddess saraswati,
Not tell me ,why do
They hesitate to have devi in their family?
Why?

I think a world without the girls
Love her like your "Daughter",
Love her like a "Wife",
Respect her like your "Mother",

Deepika Patidar

DISCIPLINE

Discipline means mental and moral training of the mind and character to produce self-control. The rules that we follow are not made or forced by other. We follow them because we know their value. A disciplined man leads an orderly life and is the successful man. If there is no plan or order the life these filled with confusion and wastage. Discipline is very necessary at every step in life.

Man needs discipline at every step. Without discipline all work in society would come to a stand-still. If everyone is forced to do what he likes. Society will break up, progress will be arrested and civilization will be destroyed. Infact, efficient living depends on discipline. There is discipline in every work of man.

The first training of discipline is imparted to us at home. We learn to do things in the proper manner, to behave properly and to obey our parents and elders. We are taught all these things with love affection and punishment. Punishment is used only when we prove disobedient. Our training is continued at school, in the classroom and more specially on the playground. And then the final training comes in life. When we suffer for every wrong step and then get wiser. Failure is thus the best teacher to make us disciplined. As in other spheres of life we have to be guided for discipline as well. Discipline is more important then food or shelter. Man may live by breath but mankind will live by discipline alone. Discipline will make the whole world a heaven of adjustment, tolerance and brotherhood where everybody will be happyto work and live well.

Ritu Agrawal
(M.Ed.)

All izz well

Corruption in India is like hell,
But all izz welt.....

CWG has rung the bell and the CAG has
called the bluff,
For all isn't so well

A forgery scam in it i can smell,
But aall is indeed well.....

In India many superstitions dwelt,
But aal izz surely well....

The truth no one will tell,
But aal izz well....

The poor don't get justice even if they yell,
But, gentelmen, aal izz well....

The gene of humanity is absent from
many person's cell
But aal izz well....

Our country our ministers in any auction may sett,
But aal izz well, of course!

What if all the corrupt were drowned in a well
I think, then definitely,
aall iizzz well....
and would be so forever!

Niharika Kumrawat
B.Ed.

A FAIRY COME

Once in my dream
A fairy comes !!!
I am amazed in-a dream itself
At this age, really
A fairy comes? She modded and said
"A fairy comes" As, always a child is sleeping
Inside your heart
To walk that child up
A fairy comes
To unsure you that still, at this age
You should have a faith on your dreamy land
A fairy comes.....
To unsure still, your dreams can come true
'Have some faith'
A fairy comes
Late the child of your heart awake pamper
Her for some line, hold her hand fly high very high
In to sky as sky has no limit & of course to hold your hand
A fairy is always there.....

Bharti Malakar
B.Ed.

SELF AWARENESS

[EXCELLENCE IN ACTION]

"we are what we repeatedly do. Excellence then, is not an act ,but a habit".- Aristotle self awareness is basically a development process of one's own self. In the pursuit to follow the process one is not required to sit and dew out from the past events, his virtues and vies, which I a common tendency for any one to start with. The need to stud one's own self arises , unfortunately at a very late stage of like, may be due to the fact that common peoples, different phases of life have different horizons to explore and as an explorer, one has to encounter in varied terms, the realities of life e.g. duties, responsibilities, lures, pains and pleasure and life's other ordeals.

It also says in gita in almost the same way lie Aristotle's statement.

It says- "Excellence in action is yoga and man should live himself by his own conscientious, conscious and elevating efforts." To boost up one's effort in this direction, there is no more encouraging fact than the unquestionable ability of man to elegant his life by conscious endeavor. If that is so, then one question comes in mind whether 'yoga' is one way amongst many other methods to follow in achieving self-awareness.

When we perceive 'yoga' as excellence in action it is understandable And acceptable but at the same time when we try to visualize ourselves doing the practice of 'yoga' we advertently or inadvertently, visualize our self a 'yogic'.

Because both are so interlinked and intermingled that we can not make as separate entity.

The word 'yoga' also before getting a simple explanation and definition' happens to be in our thought process, as something spiritual and heavenly, which is out of Repack for commoners. But after getting a simple definition like "Excellence in action", We feel little comfort and it becomes acceptable to us.

In the same way ,to remote our fearful thought process, if we start searching the pages of bhagawadgeeta, we find a very simple definition of the word' yogic '.It says like this, the yogis (man of action) having abandoned attachment, perform action merely with the senses, for the purification of the self (heart).The term 'yoginah' stands for karma yogis (man of action). As an example it is said ."when it rains, it is useful to the crops and people Etc. but the rains is not aware of the fact that it is failing and whole thing for us to be more clear, makes our mind out of fear of having being forced to do something spiritual.

From all that we have discussed we come to the following conclusion, that a conscious endeavor to elevate lift through Excellence in habbit is the way achieve.

Archana Panwar
M.Ed.

Glimpses of Divine

Deep in the core of the heart,
When humans feel compassion for all,
Almighty is wonderous more,
Fragrance of his presence is shown,

Being together in harsh situations,
Even though the relations are sore,
There exists an indulgence with all,
Fragrance of his presence is shown.

Living peacefully with flora and fauna,
happy, being not bore,
creating a rich heritage for generations,
is an act that splendor will like more

Striving for maintaining healthy environment,
Is a noble work, we hope,
Fleeting years are making us worry,
There is chance for fragmenting our globe

Worry not! O son of almighty,
His fragrance of presence will bless us more,
The powers given to us should be,
given a right direction, even for all.

Meenakshi Patidar
B.Ed.

EGO OR ARROGANCE

Thinking highly of one's wisdom. Wealth, physione, beauty, experience, social status or family creates the delusion "I should be loved or respected for these thing ."This self -love, or rather council-, removes all sense of reality and generates many false notions On top of that it.

Fragrance of Presence !

I heard someone whispering in the darkness,
that was I, all alone, when I closed my eyes,
I felt the fragrance of presence enlightening me.

When, I was in the deep thoughts of my mind
that motivated me on when I wanted to give up,
I was awakened by the fragrance of presence of the goals
that inspired me to" go ahead till my last Breath.

Now, I realised that I was never alone,
that the blooming dreams, when I work hard come true
the fragrance of presence of Almighty is always with me,
Belief, cherished me to touch the space with glory.
The fragrance of presence.....of Almighty !

Keerti Gupta
B.Ed.

Inspiration Froms "NATURE"

Nature, the storhouse
of all ideas and the
mother of all inspirational
resources, has inspired
poets, painters,
musicians and even
scientists for centuries
The beauty, the wisdom
and the ingenuity that
inspired these
distinguished people to create masterpieces
is available to each one of us too.

In the course of river,
in the life cycle of
a butterfly and even
in a tiny seed.....nature
has messages of inspiration
One of the most inspiring phenomenon in nature
transformation of a caterpillar to a butterfly
Through the transformation of a tiny
insect that once crawled
to a brilliantly coloured
creature that can fly, nature is message is
Good things come to those who wait !

Each time a seed drives
its way through the soil
in order to survive, each
time a river overcomes
big rocks on its path, each
time a wiggly caterpillar
transforms itself into a beautiful butterfly, nature is inspiring you to excel.
The next time you want
to be inspired, all you have to do is to look deeper into the natural world and hear the '"secret messages nature sends.

The birth of a plant is one such inspiring event
The root and shoot of a germinating seed exert
considerable force to burst open the seed coat
and break through the
hard ground to begin its life Each time a tiny
^ Seeding pushes its way
through the soil, nature inspires us that the
Roots of success are formed through hard work.

Dipeeka Sharma
B.Ed.

Peace, Not Pieces

Millions of bodies slaughtered,
Millions have lost their sons and daughters,
All I see is blood everywhere,
Humanity lost far some where
There will be a day when
terrorism will have such a face,
That one day mankind would be
difficult to trace.
Well, the world has fallen enough
into the hands
of social thesis and antithesis.
Its high time that we work
towards Peace, not Pieces.

Monika Patidar
B.Ed.

WHAT IS LIFE

Life is like a puzzle

Try to solve it
Life is like a hurdle'
Try to over come it
It is like an empty pot

Fill it with your knowledge and wisdom,
It is like a quiz
Answer every question of it
If is like a golden chance make use of it,
It is my mystery
Understand it

It is like fire,
Be enlightened by it
If is like love,
Enhance yourself with it
If is like an internals truth
Realize it
It is like a race
Always try to win it.

Sarala Pagar
B.Ed.

God's Gift 'My Teacher'

Mother said, its time for you to go to school my kid dear.

I shivered to think what I would do without my mother near.

But there was my teacher who for me cared.

She taught me & everything with me shared.

To sing, to dance read & write to draw & paint.

Everything I owe to my teacher that's right

She scolded me when I did something wrong.

No wonder I grow up with morals so strong.

My future is in her hand

I know God sent her for me.

She is the best in all the land

Thank you teacher thank you all

That you did for me.

Neha Dashore

B.Ed.

SECRETS OF SUCCESS

What is it that makes people successful and I mean really successful compared to you or me? Are they smarter or do they work harder? Are they risk takers or have powerful and influential friends? Well, discovered the list and want to share it with you. I hope you take these not-so- secrets to heart and realize your dreams what ever they may be.

1. How you think is everything. Always be positive, think of success, not of failure. Beware a negative environment.
2. Decide upon your true dreams and goals: write down your specific goals to reach them.
3. Take action. Goals are nothing without action.
4. Never stop learning read books. Get training & acquire skills. Becoming a life long learner would benefit us. Its funny that once you're out of school you realize how enjoyable learning can be. What you learned today.
5. Be persistent and Work Hard: success is a marathon, not a sprint never give up. I think every story of success I read entails long hard hours of work. There is no getting around here and there. But ,if you're working towards something that you're passionate about, something you-love then is it really work?
6. Learn to analyze details: get all that fact, all the inputs. Learns from your mistake. I think you have to strike a balance between getting all the facts and making a decision with incomplete data- both are traits of successful people. Spend time gathering details, but don't catch 'analysis paralysis'.
7. Focus your time and money: don't let other people or things distract you. Remain less focused on your goals and surround yourself with positive people who believe in you . don't be distracted by the tasks that are not helping you achieve your goals .
8. Don't be afraid to Innovate: be different. Following the herd is a sure way to mediocrity. Follow through that break- out idea you have. Ask yourself "what would I do if I wasn't afraid?"
9. Deal and Communicate with people effectively: No man is an island. Learn to understand and motivate others. Successful people develop and nature a network and then only do that by treating people openly, fairly and many times firmly. There is nothing wrong about being Firm-just don't cross the a-hole line. How do you deal with people?
10. Be Honest: Take responsibility, otherwise numbers 1-9 won't matter.

Bharti Goad
B.Ed.

TAKE THE INITIATIVE

Youth is a struggle as is life in any kind a endeavor, taking the initiative is the key. As the Japanese saying goes, "seize the imitative and you will win."failing to talk the initiative at the regret Moment can lead to defeat. Seizing the initiative is the sure way to victor. Give full attention to even the smallest matters. Always promptly take the appropriate measures in any situation. Each sensitive and earnest action taken for the members happens and for the success of our movement spreads by chanting Nam-myo -ho-renge - kyo. It is the key that unlocks our inner courage. It enables us to bring forth the world of bodhisattva within us, irrespective of time, place or circumstances. It gains momentum through the passion, encouragement and Responses of leaders initiative will resolve the problems of life.

"Life is a struggle that's what makes life interesting having problems enables us to challenge our human revolution."

Trapti Trivedi
M.Ed.

SUCCESS V/S FAILURE

Relax for a while

Think with a smile .

Grab success at very mite.

Go for it! All the best.

S – See your goals and set a purpose.

U – Understand the problems and difficulties.

C – Clear your doubts and fears.

C – Create a positive attitude and atmosphere.

E – Embrace the challenge and talk.

S – Stay on track and chase the goal.

S – Show the world you can do it and be a winner

F – Fear and Frustration.

A – Aggressions and abuse.

I – Insecurity and Indiscipline.

L – Loneliness and Laziness.

U – Uncertainty and Unawareness.

R – Resentment and recklessness.

E – Emptiness and Envy.

Avoid it ! God bless you,

Priya Shukla

B.Ed.

How the months got their names

January : Januarious : This month was dedicated to Janus the Roman God of doors. Janus had two faces, one looking back at the old year and the other looking forward to the new year.

February : Februarius, Feburawas the Roman purification festival, which took place at this time of year.

March : Martius, from Mars the Roman God of war.

April : Aprils, from Aperire, latin for open because plants begin to open during this month.

May : Maius probably comes from Maia, the Roman goddess of growth and increase.

June : Junius, either from a Roman family name Junius, which means young or perhaps after the goddess Juno.

July : Jxulius after Julius Caesar this month was named in Caesar's honour by Mark Antony in 44 BC Previously this month was called quintus from the world quintus, five as it was the fifth month in the Roman calendar.

August : Augustus - named in 8 BC is honour of Emperor/Augustus

September : From Septem or seven because it was the seventh month in the Roman calendar

October : From Octo or eight, the eight month in the Roman calendar.

November: From novem nine, the ninth month in the Roman calendar.

December: From decen or ten, the tenth month in the Roman calender.

Priyanka Bhalse
B.Ed.

Education of Girls

If we educate a boy, we educate a good person. But if we educate a gir !, we educate the whole family.

Women mean one half of humanity. All talks of national reconstruction are hollow without the education of women. National reconstruction and regeneration is possible only when educated girls are in the fore front of national development. So far it has been a male dominated world. Women played only second fiddle to men in all walks of life. They were condemned to be within the four walls of the house. However, education has given them a new confidence. But the situation is changing very fast. The academic world is no longer the monopoly of men. In every country there is always a sizeable number of conservatives. They are deeply rooted in the past. They refuse to march with the times. Actually they try to arrest the onward march of the society. There are still many sections in India which still discourage girls from going to schools.

Consequently a sizeable portion of the population is deprived of education. Most of the people are against sending girls to schools and colleges. They consider that their responsibility is over, the moment their daughters are married. Cooking, house managing and embroidery are all that girls need to learn. More and more young women are coming forward to challenge the dominance or influence of men. Self claimed superiority of men is cracking due to meritorious girls. Educated girls and women are contributing to the welfare of society. We will find women excelling there, they have proved to be better doctors, artists, engineers and politicians, like 'Pratibha Devi Patil', President of our subcontinent, than many of their male counterparts. Many state governments have given some special incentives to attract more and more girls to schools and colleges. It will exploit women's skills and talents for national development.

Shiv Shankar Singh
M.Ed.

My Mother

A lovely person in a strange crowd
Walking, just alone on a road.

I was the one, who was so sad,
No ray of hope, time was so bad.

Suddenly a thought came in mind
I just turned, and looked behind.
My mother was smiling at me,
I kept my head on her knee.

She asked in a sweet voice,
What happened my child ?
She was full of softness and mild.

I said, mother what should I do,
Life is aimless, nothing to do.

She kept her hand on my eyes
and slowly whispered, that everything is fine

Do hard work and achieve your aim,
you have to win this life's game.

Then I found, goal of my life,
She showed me the path of life.

She is the source of inspiration for me.
She is the one who supports me .
Oh! mother you are so nice,
very precious and beyond all prize.

Alok Kumar Ray

CHILD LABOUR

Can we eliminate child labour ? Thought it is a desirable goal, the fact remains that in the given socio - economic scenario that is prevalent in our country. It is virtually impossible to do away with child labour. One cannot dispute the fact that employers exploit children by paying them much less than what they would pay to an adult and the future of the working children is ruined as they will not be able to attend schools and get educate for a better future.

But when one considers the economic compulsions of the families which force the children to work, one will be compelled to admit that elimination of child labour will be an instant dream as long as the socio - economic status of the families are not improved.

Realizing the harm caused by child labour, the Indian government made laws to protect children & From exploitation at work and to improve their working condition. Besides, a comprehensive law called child labour (prohibition and regulation) act 1986 was promulgated to prohibit employment of children in certain hazardous occupation and processes.

In 1987, the Indian government formulated national policies on child labour to protect the interest of children and focus on general development programmers for the benefit of children.

As a part of this policy, national child labour project have been set up in different parts of the Country to rehabilitate child labour. Under these project, special school are established to prove non formal education, vocational training, supplementary nutrition etc. to children who are withdrawn from employment.

Thought elimination of child labour is an impossible task in the current socio-economic scenario, the Indian government is committed to the task of ensuring that no child remains illiterate Hungry and without medical care. When this ideal will be achieved, is a million dollar question. The developed countries are exerting pressure on developing countries like India to eliminate child labour. According to the current thinking the developed countries may stop import of those goods that involve child labour in their production. In some of our cottage industries like making of carpets. Children are Employed in larger numbers. These carpets ,which are being exported ,may soon lose their market abroad if the producers of these carpets persist with child labour. Child labour is, no doubt, an evil that should b done away with ,at the earliest. The prevalence of child Labour.

Child labour is, no doubt, an evil that should be done away with, at the earliest. The prevalence of child labour reflects badly on society which is not able to stop this evil but in a society many household have to suffer the pangs of hunger if the children are withdrawn from work.

These families have to send their children to work, even if the future of these innocents is ruined ,as that is the only choice open for them to survive in this world. Therefore, unless the socio-economic status of the poor families is improved, India has to live with child labour.

Nidhi Sharma
B.Ed.

My Friends

There was a barren land in front of me
Mind full of thoughts and shivering knee
Some beautiful angels hold my hands
whom I call my friends.
So caring, so loving, so understanding they are,
Hugging me tightly they never let me go far.
I'm gonna spend my four years with them
Im so lucky to get all the same
We eat, laugh and cry together
I'm now so habitual to their company
I now got my second home here,
because they treat me as family member.
I wish everybody gets buddies like you,
But God make such angels why so few?
How lucky I'm to find you!

The Best

The best teacher is experience. The best student is attempt.
The best book is life.
The best lesson is Patience.
The best spot is Duty.
The best dress is smile.
The best food is thought.
The best shelter is truth.
The best medicine is laughter.
The best relation is love.

Roopali Mandloi
B.Ed.

What determines the success ?

Let A, B, C, D.....=1, 2, 3, 4, 5

1. Love = 12 +15 + 23 + 5 = 55% No
2. Ability = 1 +2 + 9+ 12 + 9 + 20 + 25 = 78% No
3. Skill = 1 (11 +9+ 12 + 12 = 63% No
4. English = 5+13 + 7+12 + 9 +19 +18 = 73

   NoThe thing that determines success is
5. Attitude= 1+ 20 + 20 + 9 + 20 + 21+4 + 5=100

   Yes!

Tasmin Johar

B.Ed.

Winner

1. The winner is always part of the answer
2. The winner always has a program
3. The winner say "Let me do it for your"
4. The winner sees answer for al! problems.
5. The winner says "It may be difficult but it is possible"
6. Winners have dreams.
7. Winners says, "I must do something"
8. Winners are a part of the team
9. Winners see possibilities.
10. Winners believe in winning.
11. Winners are like a Thermostat
12. Winners stand firm on values but compromise on pettythings.
13. Winners follow the philosophy of empathy...Don't do to others what you would not want them to do to you"
14. "I can do it" Winners say
15. "Winners don't do different things. They do same thing in different way.
16. Winners Believe "Opportunity knocks only once, if you ar unable to recognise it, it will never knocks again"

Loser

1. The loser is always part of the problem
2. The loser always has an excuse
3. The loser says "That is not my job"
4. The loser sees a problem for every answer
5. The loser says, "It may be possible but it is too difficult."
6. Losers have schemes
7. Losers say, "Something must be done"
8. Losers are apart from the team
9. Losers see problems
10. Losers believe that for them to win someone has to lose
11. Losers are like thermometers.
12. Losers start firm on petty things but compromise on values
13. Losers follow the philosophy, " Do it to others before they do it to you"
14. Losers feel,"! can not do it

Ajay Kumar Singh
M.Ed.

Time is money

We Indians do not know the value of time. Our leaders and officers are not punctual. They never come in time. Trains are always late. When we waste our time, we waste our money, we waste our wealth, we waste our future. Our is an age of speed. In a big factory, a few minutes delay means a loss of lakhs of rupees. It is said that time and tide wait for none. Every second may be golden opportunity to do well and achieve our goal. Loss of a minute may mean the loss of a fortune. People living in prosperous country know the value of time. They know that time is precious. Money is the payment we get for work, but work, is time. It means when we waste our time, we wastes our money also. An irregular and unpunctual student waste his time and he does not do well in his life. We know that knowledge is best kind of wealth. Time is money means it is valuable and is life itself. One who wastes time cannot be successful in life.

IndraBhushan Tiwari

M.Ed.

Campus Address

Gram : Borawan, Teh. - Kasrawad, Distt - Khargone

Tel No. - 07285 277853, Mob. - 9424056999

Visit us : www.gbystedu.com.

email : principal.gbyssm@gmail.com